RNI Reg No MPHIN/2007/27127
ISSN: 3048-9954 (Print)

अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

आचार्य भगवन् का मंगल आशीर्वाद ग्रहण करते हुये गवर्नर थावरचंद गहलोत, सांसद शंकरलालवानी, विधायक महेन्द्र हार्डिया, जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट एवं पवन जैन प्रेमी आदि।

वीर निर्वाण संवत् - 2552
पौष शुक्ल, वि.सं. 2082, दिसम्बर 2025
अंक : चौहत्तर
वर्ष : उन्नीस

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महा मुनिराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी उदयनगर इंदौर में पधारे अनेक विद्वान।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्यश्री 108
विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

• परामर्शदाता •
प्राचार्य डॉ. पं. शीतलचंद जैन, जयपुर मो. 9414783707
प्रो. डॉ. ऋषभचंद जैन, एकलव्य यूनिवर्सिटी, दमोह मो.: 9431441951
। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो. : 7222963457, व्हाट्सएप: 9425601161
email : drajitjn@aarjavvani.com
• प्रबंध सम्पादक •
इंजीनियर शोभित जैन, एम. टेक.
'आर्जव छाया', पारस नगर, दमोह मो. 8989459635
email : ershobhitjn@aarjavvani.com
• संपादक मंडल •
कुलपति डॉ. वी.के. जैन, सह-संपादक, तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, दिल्ली रोड, मुरादाबाद (उ.प्र.) मो.: 9997692191
email : drvkjn@aarjavvani.com
बहिन इंजी. ऋषिका जैन, सह-संपादक
आर्जवछाया, पारस नगर, सागर नाका, दमोह (म.प्र.)
email : brrisheekajn@aarjavvani.com
प्रोफेसर. डॉ. सुधीर जैन, सह-संपादक
85, डी के कॉटेज, बावड़ियाकला, भोपाल
email : profdrsudhirjn@aarjavvani.com
पं. जय कुमार 'निशांत', सह-सम्पादक
पपोरा चौराहा, टीकमगढ़
email : ptjaynishant@aarjavvani.com
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), सह-संपादक
179, समर्थ सिटी-1, गोम्मटगिरी के पास, इंदौर-459112
email : drsanjayjn@aarjavvani.com
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), सह-सम्पादक
गणेश कॉलोनी, नया बाजार, ग्वालियर-474009
email : dralpnamodi@aarjavvani.com
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, सह-संपादक
132, डी के कॉटेज, बावड़ियाकला, भोपाल-462039
email : engmahendrajn@aarjavvani.com

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 9479978084
email : sushmajn@aarjavvani.com
वेब साइट : www.aarjavvani.com
email : bhav.vigyan@aarjavvani.com

विषय : धार्मिक पत्रिका | प्रथम प्रकाशन वर्ष : 2007 | भाषा : हिन्दी | प्रारूप : अहिंसा एवं जैन धर्म से संबंधित आलेख
RNI Reg No MPHIN/2007/27127 ISSN: 3048-9954 (Print)

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-उन्नीस
अंक - चौहत्तर

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विशेष	-डॉ. अजितकुमार जैन, सम्पादक	2
2. आचार्य श्री आर्जवसागर जी का अभिवंदन ग्रंथ	-इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह	3
3. 'आचार्य आर्जवसागर रचित आगम-अनुयोग ग्रंथ में लोक एवं काल संबंधी गणित'	-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर	6
4. आचार्य आर्जवसागर रचित सम्यक् ध्यान शतक एवं ओम् योग ध्यान में ध्यान के प्रकार एवं भावनाओं का चिंतन	-डॉ. सुधीर जैन, भोपाल	9
5. श्रमण आचार्य परम्परा में आचार्य आर्जवसागर व्यक्तित्व और सृजन	-डॉ. बारेलाल जैन, रीवा	13
6. तीर्थोदय काव्य में रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग के स्वरूप का विवेचन	-डॉ. श्रीमती अल्पना जैन मोदी, ग्वा.	17
7. तीर्थोदय काव्य के रचयिता आचार्य प्रवर श्री आर्जवसागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व	-पं.दीपचंद जैन शास्त्री, भोपाल	22
8. जैनागम संस्कार में वर्तमान पीढ़ी हेतु दिशाबोधक संस्कारों का विवेचन	-ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर	28
9. उपकारी गुरुवर और तीर्थोदय काव्य	-कु. दीक्षा जैन, एम.कॉम, मण्डीदीप	30
10. आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का जीवन परिचय		35
11. समाचार		37

लेखक एवं उनके विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विशेष

-डॉ. अजितकुमार जैन, सम्पादक

प्रातः स्मरणीय, अध्यात्म सरोवर के परमहंस, संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित, सिंह वृत्ति के धारक, अभय के धारक, स्व-पर कल्याण की उच्चतम भावना के धनी, वात्सल्य मूर्ति, आध्यात्मिक संत, परम पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज चतुर्थ कालीन श्रमण-चर्या के निरंतर पालक हैं, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में लगे रहते हैं, अखण्ड ब्रम्हचर्य का तेज उन्हें इस धरा का सूर्य उद्घोषित करता है। वे कठोर साधक, ज्ञान के भण्डार, रससिद्ध कवि, सरल-स्वभावी, समाज एवं राष्ट्र हित प्रचारक, बहुभाषी, मृदुभाषी संत हैं।

पूज्यनीय आचार्यश्री आर्जवसागर महाराज के द्वारा अनेक कृतियों की रचना हुई हैं, जिनमें अनूठी छन्द निबद्ध पद्यमय तथा सरल, सुबोध और रोचक हिंदी, आदि भाषाओं में गद्यमय कृतियों को गूंथा गया है । शोधार्थियों द्वारा आचार्य श्री के साहित्य पर शोध किया जा रहा है। श्रावक एवं श्रमण, सभी को इसके पठन से शीघ्र ही, भाव भाषित हो जाता है। साथ ही, इसके नित्य पाठ से अपनी आत्म-विशुद्धि नामक नवनीत उत्पन्न करने का उत्तम साधन बनाया जा सकता है। कुछ कृतियां जैसे तीर्थोदय काव्य, पर्यूषण पीयुष, सम्यक् ध्यान शतक, आदि का प्रकाशन अंतरराष्ट्रीय स्तर के भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली द्वारा किया गया है ।उन्होंने वृहद पद विहार करते हुए चौदह प्रदेशों में शिक्षा, संस्कार, अहिंसामय विषयों पर समाज को सुबोधमयी वाणी में सचेत करते हुए जीवन में सुधार की प्रेरणा दी है। उनके आध्यात्मिकता, भारतीय दर्शन, जैन आगम के प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक जागरण के क्षेत्र में किए गए अमूल्य योगदान की मान्यता स्वरूप साहित्यिक योगदान पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय वर्ल्ड रिकॉर्ड संस्थाओं ने डॉक्टरेट और डी लिट् की मानद उपाधि सहित अनेक अलंकारमय विशेषणों से आचार्य श्री को विभूषित करते हुए देश और समाज को गौरवान्वित किया है। देश के प्रख्यात विद्वानों ने आचार्य श्री आर्जवसागर जी का अभिवंदन ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ने अपनी दैनिक व्यस्ततम चर्या, साधना एवं तपस्या के बल पर आत्म कल्याण में सतत सक्रिय रहते हुए भी समाज के सर्वांगीण कल्याण के लिए रोचक, सरल, सहज, मधुर, उपदेशात्मक विषयों पर कृतियां प्रकाशित हुई जो कि अन्यत्र दुर्लभ हैं ।साथ ही, आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से भाव विज्ञान पत्रिका का प्रकाशन, शोध लेखों के साथ, निरंतर हो रहा है ।इस अंक में भी आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित सम्यक् ध्यान शतक, तीर्थोंदय काव्य, ओम् योग ध्यान और आगम अनुयोग कृतियों पर शोध लेख प्रकाशित हुए हैं ।

वात्सल्य मूर्ति परम पूज्य आचार्य श्री आर्जवसागर महाराज ससंघ के श्री चरणों में शत्-शत् नमन, वंदन और आभार निवेदित है ।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी का अभिवंदन ग्रंथ

-इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह

इंदौर में 2025 में आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके दौरान विद्वानों राष्ट्रीय एवं अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के विद्वानों के बीच आचार्य श्री आर्जवसागर का अभिवंदन ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। जिसके तहत एक प्रकाशन समिति का गठन किया गया जिसके परामर्शक डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर, संपादक डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर एवं डॉ. श्रेयांश कुमार जी बड़ौत तथा संपादक मण्डल में डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती, ब्र. जयकुमार 'निशांत', डॉ. आशीष बम्होरी, डॉ. अभिषेक दमोह, इंजी. बहिन ऋषिका जैन दमोह, डॉ. पवन जैन प्रेमी डोंगरगांव तथा प्रबंध संपादक में डॉ. मुकेश जैन 'विमल' का चयन किया गया।

अध्यात्म योगी, कठोर साधक, अनेक चैतन्य मूर्तियों को प्रकट करने वाले, अनेक युवाओं के शिरोधार्य, समाज प्रचारक, तीर्थोद्धारक, राष्ट्रहित प्रचारक, बहुभाषी, महान विद्वान, दिगम्बरसंत आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महामुनिराज, जिन्होंने हिन्दी ही नहीं तमिल, कन्नड़, मराठी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत आदि अनेक भाषाओं में अपनी साहित्यिक रचना में समाज को दिशा निर्देश दियें हैं और आपने दिशा निर्देश देकर समाज में फैली हुई कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया है।

वर्तमान में प्रसिद्धि प्राप्त आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित एवं अपनी त्याग, तपस्या और साधना के बल से आप बहुचर्चित हैं। जिनकी ओजस्वी वाणी से हम नित प्रतिदिन अपने जीवन में सुधार की दृष्टि को अवलोकित करते हैं।

गुरुदेव अभी तक चौदह प्रदेशों में सन् 1984 से वर्तमान तक प्रतिवर्ष 500 से 1500 कि.मी. तक पद विहार करते हुए लगभग 15000 से 20000 कि.मी. नंगे पैर पद विहार की यात्रा कर चुके हैं। वे अपनी सरल, सहज, सुबोधमयी वाणी से और वाणी मात्र ही नहीं शिक्षा, संस्कार और अहिंसा के विभिन्न विषयों पर समाज को समय-समय पर सचेत करते रहते हैं। आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज को हाल ही में एक अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि प्राप्त हुई है। उन्हें अमेरिका इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा डी.लिट्. मानद (डॉक्टरेट) की उपाधि भी प्राप्त है। उन्हें यू.एस.ए., यू.एन., एशियन, लंदन, इंडिया, इंटरनेशनल, गिनीज, वर्ल्ड वाइड, बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा उनके आध्यात्मिक साहित्यिक योगदान, समाजसेवा और अहिंसा के प्रचार-प्रसार के लिए अलंकरण (सम्मान) प्रदान किया गया है। यह सम्मान न केवल जैन समाज के लिए, बल्कि समस्त भारतवर्ष के लिए गर्व का विषय है।

गुरुदेव का वात्सल्य तो अमूल्य है ही; उनकी विद्वत्ता भी देखने योग्य है। इस रूप में गुरुदेव ने अभी तक करीब 25 पुस्तकों के द्वारा शताधिक साहित्यिक रचनाओं को सृजित कर जन-जन को प्रभावित किया है। गुरुदेव के साहित्य पर विभिन्न विषयों के माध्यम से अनेक विश्वविद्यालयों में शोधार्थी पी.एच.डी. कर चुके हैं और कर रहे हैं। सभी शोधार्थियों को गुरुदेव का मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहता है। गुरुदेव द्वारा रचित कई कृतियों का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली से भी हो चुका है।

वर्तमान में गुरुदेव का आयुर्वेद की प्रणाली को प्रचारक के रूप में बहुत बड़ा योगदान है। गुरुदेव योग/ध्यान को भी अपना जीवन मानते हैं। ॐ योग ध्यान एवं सम्यक् ध्यान के द्वारा आप जन-जन को ध्यान एवं

योग की प्रेरणा देते हैं। आपके सान्निध्य में अनेकों बार डॉक्टर्स सम्मेलन; जिनमें ऐलोपैथी एवं आयुर्वेदिक दवाओं पर विचार विमर्श हुआ है एवं अनेकों अखिल भारतीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठियाँ संपन्न हुई हैं। आपके द्वारा रचित संपूर्ण साहित्य पर भी कई बार संगोष्ठियाँ संपन्न हुई हैं। अभी तक गुरुदेव के माध्यम से अनेकों विद्यालय, महाविद्यालय, शैक्षणिक संस्थान, एनजीओ और जेल, आश्रम आदि में गुरुदेव के व्याख्यानों का लाभ अनेक विद्यार्थियों सहित जन-जन को प्राप्त हुआ है।

गुरुदेव के अभी तक हुए 42 चातुर्मास से जैन समाज के धर्मावलम्बी ही नहीं अपितु नेतागण और अन्य जैनेत्तर लोग भी गुरुदेव के प्रवचनों के अंश को ग्रहण कर वर्तमान युग में अपने सामाजिक प्लेटफार्म पर अपने प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। गुरुदेव के माध्यम से प्रतिवर्ष संगोष्ठी एवं पाठशाला सम्मेलन भी आयोजित कराये जाते हैं। जिनके माध्यम से विद्यार्थियों के साथ-साथ विद्वत्जनों को गुरुदेव का मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहता है।

आपको बताते हुए हर्ष हो रहा है कि गुरुदेव रचित बहुचर्चित कृति ''तीर्थोदय काव्य'' का विमोचन सन् 2004 में तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय बाबूलाल जी गौर द्वारा मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में तथा ''प्रभावना'' कृति का विमोचन सन् 2024 में भारत के कृषि और किसान कल्याण मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा विदिशा में किया गया है; जो कि एक गौरव की बात है। आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका ''भाव विज्ञान'' का विमोचन इंदौर महानगर में मध्यप्रदेश जल संसाधन मंत्री तुलसीराम जी सिलावट के द्वारा किया गया एवं गुरुदेव की ही कृतियाँ ''आध्यात्मिक प्रवचन'' व सदाचार सूक्ति काव्य का विमोचन कर्नाटक के गवर्नर थावरचंद गहलोत, सांसद शंकर लालवानी, विधायक महेन्द्र हार्डिया के द्वारा इंदौर में किया गया। अतः राजनेता भी गुरुचरणों में अपना मस्तक झुकाते हैं।

अतः इस अभिवंदन ग्रंथ में आप अपने संदेश व सद् विचार वर्षायोग 2026 के पूर्व तक अवश्य प्रेषित करें। इस सराहनीय कार्य हेतु प्रकाशन समिति एवं संपूर्ण भारत समाज आपके संदेश व सद् विचार की आभारी रहेगी।

जैन संत आचार्य श्री आर्जवसागर जी का वर्ल्ड रिकॉर्ड से अंतर्राष्ट्रीय सम्मान एवं अनेक गौरवपूर्ण उपाधियाँ

जैन धर्म के अनुकरणीय संत, आचार्य आर्जवसागर जी महाराज को अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि प्राप्त हुई है। उन्हें यू.एस.ए., यू.एन., एशियन, लंदन, गिनीज इंटरनेशल, नेशनल, वर्ल्ड वाइड बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा उनके आध्यात्मिक साहित्यिक योगदान, समाजसेवा और अहिंसा के प्रचार-प्रसार के लिए अलंकरण (सम्मान) प्रदान किया गया है। यह सम्मान न केवल जैन समाज के लिए, अपितु संपूर्ण भारतवर्ष के लिए गर्व का विषय है।

आचार्य आर्जवसागर जी का जीवन तप, त्याग, तपस्या, अनुशासन और करुणा एवं चारित्र का प्रतीक रहा है। वे वर्षों से समाज को धर्म, नैतिकता और संयम का मार्ग दिखा रहे हैं। उनके अहिंसा एवं शिक्षा पर आधारित प्रवचन जन-जन को जीवन की सच्ची दिशा प्रदान करते हैं। वे विशेष रूप से युवाओं को नैतिक जीवन, नशामुक्ति और शाकाहार की ओर प्रेरित करते हैं।

वर्ल्ड रिकॉर्ड एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत संगठन है। जो विभिन्न क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान देने वाले व्यक्तित्वों को सम्मानित करते हैं। आचार्य श्री को अंतादि शतक, मुरज बंध, यूनिक रचना 'समय'

शब्दावली आदि एवं उनके सान्निध्य में किए गए आध्यात्मिक आयोजनों, समाज सुधार अभियानों और लाखों लोगों को प्रभावित करने वाली जीवन शैली एवं अहिंसा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रदान किया गया है। सभी को अत्यंत हर्ष का विषय है कि आचार्य आर्जवसागर जी को यू.एस.ए., यू.एन., एशियन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा अलंकृत कर उनके अद्वितीय साहित्यिक आदि योगदान को विश्वविद्यालयों में मानद की उपाधि (डॉक्ट्रेट)के योग्य माना। उन्हें चानिया यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टर ऑफ फिलासाफी एवं अमेरिका इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा डी.लिट्. की उपाधि भी प्रदान की गई। यह अत्यंत गौरवपूर्ण विषय है।

आचार्य भगवन् को 'ब्रह्माण्ड के देवता', परम दिगंबर, विशिष्ट शिष्याचार्य, कवि हृदय, कैदी उद्धारक, परमेष्ठी पद धारक, वीतराग मंत्र सिद्धहस्त, जैन दर्शनाचार्य, ध्यान उपदेशक, अहिंसा प्रचारक, साहित्य रचनाकार, 'जैन धर्म के गौरान्वित संत', 'अहिंसक प्रचारक', 'आध्यात्मिक संत', 'साहित्यिक प्रतिभा संपन्न', 'आहारौषध विज्ञान के ज्ञाता', '20 वीं सदी के हिंदी साहित्य के सर्वोच्च शिखर', 'बहुभाषाविज्ञ आचार्य ' संघाचार्य, 'आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित बुंदेलखंड के प्रथमाचार्य', 'विश्व के भगवान', 'World God', 'करुणा के सागर', 'अहिंसा के पुजारी', तमिल देश के उद्धारक संत जैसी उपाधियां देकर स्वर्ण भारत सम्मान, राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार, भारतीय रत्न अवार्ड ,पद्म श्री गौरव सम्मान, भारत गौरव रत्न , भारत प्रतिभा सम्मान, नेशनल अवार्ड, प्रेरणा सम्मान, भारतीय उत्कृष्टता सम्मान, नव भारत सेवा रत्न सम्मान, ग्लोबल अचीवर्स अवार्ड, अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार, समाज सेवा आदर्श रत्न पुरस्कार, विजीनरी लीडर अवार्ड, विजय रत्न सम्मान, विद्या रत्न सम्मान, पीएम मोदी विजन ऑफ भारत अवार्ड, श्रेष्ठ रत्न सम्मान, भारत स्वाभिमान, विजय गौरव सम्मान, स्टार ऑफ द ग्लोब अवॉर्ड, अखंड भारत सम्मान, राष्ट्रीय गौरव सम्मान, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय पुरुस्कार, एपीजे अब्दुल कलाम नेशनल अवार्ड, स्वामी विवेकानंद प्रेरणा सम्मान, डॉ. भीमराव अंबेडकर नेशनल अवार्ड, उज्जवल भारत पुरस्कार, इंडिया प्राइड इन एजुकेशन पुरस्कार, सद्भावना सेवा सम्मान, विश्व रत्न सम्मान, World Talent Award, Global Prestigious Award, International Star Award, Rising Bharat Star Award Certificate of life time Achivement, Droupadi Murmu Presidential Honor for social justice, Honorary doctorate degree by America international University, Kindness Ambassador of India Award, India Influencer Award, सहित अनेक अवार्ड एवं उपाधियों से भी सम्मानित किया है ।

यह पुरुस्कार सिद्ध करता है कि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की गूंज अब केवल भारत तक सीमित नहीं रही बल्कि वह विश्वमंच पर भी अपनी विशेष छाप छोड़ रही है।

इस सम्मान के माध्यम से आचार्य श्री आर्जवसागर जी ने यह सिद्ध कर दिया है कि धर्म केवल पूजा या साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन को सन्मार्ग की ओर ले जाने वाला व्यवहारिक मार्ग भी है। उनका जीवन आज की पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है कि सेवा, संयम और साधना से व्यक्ति न केवल आत्मिक उन्नति कर सकता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन भी ला सकता है।

यह सम्मान केवल आचार्य श्री का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जैन समाज का सम्मान है। यह हमें यह भी स्मरण कराता है कि यदि हम अपने सिद्धांतों पर अडिग रहें और सेवा को अपना धर्म मानें, तो संपूर्ण विश्व हमारे कार्यों को पहचान देगा। हम सम्पूर्ण भारत वर्ष आचार्य आर्जवसागर जी को इस यूनिक सम्मान के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे दीर्घायु हों और ऐसे ही साहित्य, संस्कृति और धर्म की सेवा करते रहें।

'आचार्य आर्जवसागर रचित आगम-अनुयोग ग्रंथ में लोक एवं काल संबंधी गणित'

-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित 'आगम-अनुयोग'', दो भागों में प्रश्नोत्तर संबंधित ग्रंथों में वर्णित लोक एवं काल संबंधित गणितीय विषय पर लेखक ने विचार प्रकट किए हैं।

-संपादक

प्रथमं, करणं, चरणं, द्रव्यम् नमः।

मैं विगत 40 वर्षों से आगम के अध्ययन हेतु इसी क्रम को पढ़ रहा हूँ। इसके अंतर्गतः- प्रथमानुयोग के शास्त्रों के पढ़ने से हमें हमारे तीर्थंकरों सहित 63 शलाका पुरुषों के जीवन तथा पूर्व भव का ज्ञान है। श्रद्धान पुष्ट होता है। करणानुयोग से हमें स्वर्ग-नरक आदि तीन लोक के स्वरूप तथा कर्म सिद्धान्त का ज्ञान होकर दुष्कर्मों से जनित कर्मों का बोध होता है। धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है।

चरणानुयोग से हमें श्रावकोचित चर्या का ज्ञान होता है। भक्ष्य-अभक्ष्य, हेय-उपादेय का ज्ञान होने से हम श्रेष्ठ चर्या का पालन करते हुए जीवन सुखमय बना लेते हैं। द्रव्यानुयोग से 6 द्रव्यों एवं 7 तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त कर आत्मिक विकास के पथ पर बढ़ते हुए अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकते हैं। बहुश्रुत आचार्य समन्तभद्रस्वामी ने अपने रत्नकरंडक श्रावकाचार में सम्यग्ज्ञान का स्वरूप बताने के बाद करणानुयोग का स्वरूप बताया है।

लोकालोकविभक्तेर्युगपरिवृत्तेश्चतुर्गतीनां च।
आदर्शमिव तथामति रवैति करणानुयोगं च।।44।।

उक्त प्रकार का सम्यग्ज्ञान ही लोक-अलोक के विभाग को, युगों के परिवर्तन द्वारा चारों गतियों को दर्पण सदृश ऐसे करणानुयोग को जानता है अर्थात् जिसमें लोक-अलोक, युग परिवर्तन और चतुर्गति परिवर्तन का वर्णन है, इस अनुयोग से सम्पूर्ण विश्व का स्वरूप जान लिया जाता है। सरल शब्दों में यदि हम समझें तो लोक स्वरूप (भूगोल-खगोल) एवं कर्म सिद्धान्त की विवेचना करने वाले शास्त्र करणानुयोग के अंतर्गत आते हैं। गणित एवं गणित ज्योतिष का विषय लोक रचना के विवेचन में सहयोगी होने के कारण करणानुयोग के ग्रंथों में सहजता से आया है। इस गणित को समझने हेतु रचे गये स्वतंत्र गणितीय ग्रंथ भी इसी अनुयोग के अंतर्गत आ जाते हैं। संक्षिप्ततः गणित, ज्योतिष, भूगोल-खगोल एवं कर्म सिद्धान्त के समस्त ग्रंथ करणानुयोग के अंतर्गत आते हैं। श्वेताम्बर परम्परा में उपलब्ध अनुयोग विभाजन में भिन्न प्रकार से अनुयोग हैं। फलतः हम यहाँ स्वयं को करणानुयोग तक ही सीमित कर रहे हैं।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ने 2 भागों में आगम-अनुयोग कृति की रचना की है। प्रथम भाग में प्रथमानुयोग एवं करणानुयोग है। दूसरे भाग में चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग सम्पूर्ण कृति प्रश्नोत्तर शैली में

लिखी गई है। मेरा विषय लोक एवं काल संबंधी गणित है जो करणानुयोग के अन्तर्गत आता है। अतः मैं केवल इसी पर ध्यान केन्द्रित कर रहा हूँ।

गत शताब्दी के उत्तरार्द्ध के कई दशक इस अनुयोग की घोर उपेक्षा के रहे। स्थिति यहाँ तक हो गई थी कि तत्त्वार्थसूत्र के तीसरे-चौथे अध्याय, जिसमें भूगोल-खगोल का विषय आया है, तो लोगों ने स्वाध्याय में छोड़ना शुरू कर दिया था। इससे करणानुयोग में निहित ज्ञान का प्रसार अवरुद्ध सा प्रतीत होने लगा। जैन समाज की, गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से 1972-1985 की अवधि में मेरठ जनपद के अंतर्गत हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की विशाल प्रतिकृति (जम्बूद्वीप रचना) के निर्माण एवं बाद के वर्षों में तेरह द्वीप रचना, तीन लोक रचना एवं बड़ागॉव (बागपत) में त्रिलोक रचना के कारण समाज में करणानुयोग के साहित्य के अध्ययन के प्रति पुनः आकर्षण उत्पन्न हुआ जो एक शुभ लक्षण है। सदियों पूर्व से ही इसके अध्ययन की आवश्यकता एवं उपयोगिता आचार्यों द्वारा प्रतिपादित की हुई है। 2 उदाहरण दृष्टव्य हैं। 9वीं शताब्दीं के आचार्य महावीर (814-877ई.) लिखते हैं किः -

बहुभिर्विलापैः किं त्रैलोक्ये सचराचरे।
यत्किंचिद्वस्तु तत्सर्व गणितेन् बिना न हि।।

अर्थात् और अधिक प्रलाप करने से क्या लाभ है? जो कुछ भी इन तीन लोकों में चराचर वस्तुएँ हैं उनका अस्तित्व गणित के बिना नहीं है। द्रव्यानुयोग के बहुश्रुत विद्वान एवं मोक्ष मार्ग प्रकाशक के रचनाकार पं. टोडरमल (1720 -1767 ई.) लिखते हैंः-

'बहुरि जे जीव संस्कृतादि ज्ञान सहित हैं किन्तु गणित आम्नायादिक के ज्ञान के अभाव तैं मूल ग्रंथ या संस्कृत टीका विषै प्रवेष न पावे हैं ते इस भाषा टीका तै अर्थ को घारि मूल ग्रंथ या संस्कृत टीका विषै प्रवेष करहुॅ। पं. टोडरमल जी के इस कथन से यह स्पष्ट है कि जैन ग्रंथों (विशेषतःकरणानुयोग) को समझने हेतु गणित का अध्ययन आवश्यक है। अपने 40 वर्षीय अध्ययन के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि गणित के बिना करणानुयोग एवं करणानुयोग के बिना जैन गणित को समझना असंभव है।

पूज्य आचार्य जी ने इसी का अनुभव कर अत्यन्त सरल शब्दों में प्रश्नोत्तर रूप में यह कृति सृजित कर हम सब पर महान उपकार किया है। आगम-अनुयोग भाग-1 में करणानुयोग पर 6 अध्याय निम्नवत् हैं-

अध्याय-क्रमांक	शीर्षक	कृति में प्रश्नों की संख्या
5	जैन गणित विज्ञान	120
6	लोक रचनादि	100
7	द्वीप पर्वत काल परिवर्तनादि	106
8	जीवों का अवगाहनादि	97
9	ज्योतिषी, विमानवासी व गुणस्थानादि	147
10	जीव समास, व मार्गणादि	176
	योग	746

उक्त अध्यायों के शीर्षकों से स्पष्ट है कि इनमें लोक एवं काल संबंधी प्रचुर सामग्री है। अध्याय -5 जैन गणित विज्ञान में करणानुयोग, परिकर्मविधि, परिधि एवं क्षेत्रफल से लेकर लौकिक एवं लोकोत्तर मान से सम्बद्ध अनेक विषयों के माध्यम से समझाया है। इस अध्याय में 120 प्रश्न हैं हम जानते है कि जैन दर्शन में काल की सूक्ष्मतम इकाई समय है उसको बताते हुए आप लिखते हैं कि 'भेद गति से एक परमाणु को आकाश के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक जाने में जितना काल लगता है उसे समय कहते है यह काल की इकाई (सबसे जघन्य अवस्था) है।'(पृ. 66)

अब पल्य को समझते हैं प्रायः लोग समझ ही नहीं पाते कि यह काल की इकाई है या क्षेत्र की। आपने लिखा है भूमि के गहरे गड्ढे को पल्य कहते हैं उस पल्य के आधार से पटीगणित काल को पल्य या पल्योपम कहा जाता है। पल्य यह संज्ञा असंख्यात वर्ष के लिए प्रयुक्त होती है। (पृ. 66) इसी प्रकार लोक के बारे में बताया है कि समस्त आकाश के मध्य स्थित है एवं उसके चारों ओर अलोकाकाश है। (पृ. 74) अध्याय -6 में लोक के स्वरूप को बतलाया है इसमें 100 प्रश्न हैं। अध्याय -7 द्वीप पर्वत काल परिवर्तनादि में 106 प्रश्नों के माध्यम से विभिन्न द्वीपों एवं षट्काल परिवर्तन को समझाया गया है। अध्याय -8 में जीवों के आकार प्रकार को समझाया गया है। इसी प्रकार अन्य अध्याय हैं। ब्र. बहिन ऋषिका जी ने कृति का परिचय देते हुए लिखा है कि: - गुरुवर की यह अनूठी कृति संपूर्ण जैन दर्शन को बताने वाली है एवं अत्यंत सरल शब्दों में आगम ग्रन्थों का मुख्य ज्ञान कराने वाली है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें गुरुवर रचित इस 'आगम-अनुयोग' कृति को पढ़ने का, इसका स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

'आगम-अनुयोग' कृति (भाग-1) में करीब 1274 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रथमानुयोग एवं करणानुयोग का विशेष वर्णन किया है। जिनमें से लगभग 750 करणानुयोग के है। त्रैसठ (63) शलाका पुरुषों, कुलकरों आदि महापुरुषों संबंधी पुराणों का संपूर्ण सारांश 'आगम-अनुयोग' में प्रथमानुयोग के लगभग 400-500 प्रश्नों में समाहित है। यह प्रथमानुयोग का ज्ञान भव्यों के लिये अत्यंत उपकारी है। इसके ज्ञान से जीवों को सम्यग्दर्शनादि रूप बोधि और धर्मध्यान, शुक्लध्यान रूप समाधि की प्राप्ति होती है। इसी अनुयोग में भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था, पुरुषार्थ की भी विस्तृत विवेचन है।

इसी प्रकार सरल शब्दों में सभी विषयों को समझाया गया है। अतः आगम अनुयोग कृति (भाग-2) में जो कि 800 प्रश्नोत्तर में है पठनीय एवं मननीय है। इसके अध्ययन से चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग के विषय को सरलता से हृदयंगम किया जा सकता है। इनको पढ़ने से मूल ग्रंथों/टीकाओं को पढ़ने का ठोस आधार बन जाता है।

सन्दर्भ :

1. अणुयोग दाराईम् प्रस्तावना, जैन विश्व भारती लाडनूँ (राजस्थान)
2. आगम अनुयोग, भाग 1 एवं 2, आर्जव तीर्थ एवं जीव संरक्षण ट्रस्ट, 4 लार्डस कैम्पस, लक्ष्मी परिसर, नहर के पास, बावड़िया कलाँ, भोपाल 462039

निर्देशक - प्राचीन भारतीय गणित केन्द्र
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

आचार्य आर्जवसागर रचित सम्यक् ध्यान शतक एवं ओम् योग ध्यान में ध्यान के प्रकार एवं भावनाओं का चिंतन

-डॉ सुधीर जैन, भोपाल

'सम्यक् ध्यान शतक' एवं 'ओम् योग ध्यान' नामक कृतियाँ आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित ध्यान (Meditation) विषय पर लेखक द्वारा ''ध्यान एवं भावनाओं के चिंतन'' पर विचार प्रकट किए हैं।

-संपादक

प.पू. आचार्य 108 आर्जवसागर जी महाराज दिगम्बर जैन परंपरा के एक प्रतिष्ठित आचार्य हैं। वे आध्यात्मिक साधना, आत्म-विकास और 'ओम् योग ध्यान' के प्रचार-प्रसार हेतु प्रसिद्ध हैं। उनका जीवन त्याग, साधना, स्वाध्याय और आत्म-कल्याण के आदर्शों से प्रेरित है। उनका दीक्षा-जीवन तप, संयम, साधना और शास्त्रों के गहन अध्ययन में व्यतीत हुआ है। वे विशेष रूप से युवाओं को आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रेरित करते हैं। उनके प्रवचनों में आत्म-शुद्धि, अहिंसा, अपरिग्रह और ध्यान-योग के महत्व पर विशेष बल दिया जाता है।

आचार्य आर्जवसागर जी का मानना है कि ध्यान (मेडिटेशन) आत्मा को जानने और मोह से मुक्त होने का प्रमुख साधन है। आप कहते हैं कि निर्ग्रन्थ बने बिना मोक्ष संभव नहीं और निर्ग्रन्थ बनने के लिए ध्यान-योग होना बहुत जरूरी है उनके विचारों के कुछ मुख्य बिंदु-

अंतरमुखी साधना- ध्यान योग का मूल उद्देश्य इंद्रियों को विराम देकर आत्मा की ओर उन्मुख होना है।

अनासक्ति और समता- ध्यान में राग-द्वेष से मुक्त होकर समता भाव में स्थित रहना आवश्यक है।

प्रत्येक दिन ध्यान अभ्यास- आचार्य श्री शिष्यों को प्रतिदिन प्राणायाम, एकाग्रता और स्व-चिंतन का अभ्यास कराने पर बल देते हैं।

ध्यान से आत्मिक शांति- ध्यान से मन शुद्ध होता है, क्रोध-लोभ जैसे विकार क्षीण होते हैं और आत्मिक शांति की प्राप्ति होती है। 'सम्यक् ध्यान शतक' और 'ॐ योग ध्यान' के प्रासंगिक जानकारी के आधार पर ध्यान के प्रकारों एवं भावनाओं का चिंतन आचार्य श्री अपनी कृतियों में निम्न प्रकार से प्रस्तुत करते हैं। सम्यक् ध्यान शतक में ध्यान के चार मुख्य प्रकार वर्णित हैं, साथ ही उनकी विशेषताएँ, भावनाएँ (चित्त की अवस्थाएँ), आलम्बन आदि का पद्य रूप में विवेचन है।

1. आर्त ध्यान- ये दुःख, पीड़ा, वियोग आदि से उत्पन्न चिंतन/भावनाएँ होती हैं। इसके चार उप प्रकार हैं जैसे- इष्ट-वियोग-जनित (इच्छित वस्तुओं से वियोग), अनिष्ट-संयोग-जनित (अप्रिय या अप्रिय संयोग से), वेदना जनित (रोग, पीड़ा आदि) और निदान जनित (भविष्य के सुख-भोग की आशा-प्रत्याशा)

2. रौद्र ध्यान- इसमें मन हिंसा, झूठ, चोरी, अन्य नकारात्मक, क्रूर, पापात्मक भावनाओं या कर्मों की ओर

झुकता है। जैसे दूसरों को चोट पहुँचाने की योजना, झूठ बोलने की प्रवृत्ति, स्वार्थ, परिग्रह आदि।

3. धर्मध्यान- यह शुभ ध्यान है, यह आत्म-विकास की ओर झुकता है। संसार के मोह और आसक्ति-विवेक की ओर चेतना बढ़ती है। इसमें 'विभिन्न-विचार-विमर्श आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, संस्थानविचय आदि' की भावनाएँ होती हैं।

4. शुक्ल ध्यान- उच्चतम गम्भीर ध्यान, जहाँ मन, वाणी, काया - क्रमिक गतिविधियों का संयम हो, सूक्ष्म कषायों पर भी नियंत्रण हो। शुक्ल ध्यान के भी उप प्रकार हैं, जैसे पृथक्त्व-वितर्क-वीचार, एकत्व-वितर्क-अवीचार, सयोगी केवली का सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती, अयोगी केवली समुच्छिन्न क्रिया या व्युपरत क्रिया निवृत्ति। सम्यक् ध्यान शतक में ध्यान के विषय (ध्यान का आलम्बन), स्थान, समय, आसन, क्रम, ध्येय, भावना-भाव, अनुप्रेक्षा, लेश्या आदि की विशेष चर्चा है।

आलम्बन - जिस विषय या आधार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है (जैसे वस्तु, मंत्र, वाणी, ज्ञान आदि) भावना-भाव/मनोभाव - जैसे करुणा, दया, शांति, निर्भयता, क्रोध, मोह, वियोग आदि – ध्यान की विभिन्न अवस्थाएँ और उनका प्रभाव।

अनुप्रेक्षा - चित्त का उस वस्तु से जहाँ न राग हो न द्वेष हो, एक तरह की उदासीनता या तटस्थता हो विशेषकर धर्म और शुक्ल ध्यान में तत्परता-लीनता हो।

क्रम - ध्यान प्रारम्भ से उत्तरोत्तर उस अवस्था की ओर बढ़ना जहाँ ध्यान अधिक शुद्ध, स्थिर, इन्द्रियों विषय से निर्लिप्त हो जाए।

आर्त व रौद्र ध्यान अशुभ हैं, जो संशय, मोह रूप, संवेदना आदि के कारण संसार में आसक्ति पैदा करते हैं।

धर्मध्यान और शुक्लध्यान शुभ ध्यान हैं – देवगति, मोक्ष, निर्वाण, सिद्धिगति आदि के आधार।

'ओम् योग ध्यान' के संदर्भ में संभावित स्वरूप और भावनाएँ 'ओम् योग ध्यान' से तात्पर्य है कि 'ओम्' मन्त्र, ध्वनि या अवधारणा को ध्यान का केंद्र बनाया जाए और योग के सिद्धांतों के अनुसार इसका अभ्यास किया जाए। आचार्य गुरुवर के 'ओम् योग ध्यान' के पहले मुझे अभी तक ऐसी कोई रचना विशेष नहीं मिली जिसमें 'ओम् योग ध्यान' के साथ साथ सामयिक का पूरा वर्णन/कथन हो। जिनवाणी अध्ययन के साथ 'ओम् योग ध्यान' में आचार्य श्री आर्जवसागर जी लिखते हैं कि शास्त्र अध्ययन और ध्यान एक-दूसरे के पूरक हैं - ज्ञान से विवेक और ध्यान से अनुभव प्राप्त होता है।

'ओम् योग ध्यान' एक आध्यात्मिक साधना है जिसमें 'ॐ' मंत्र के जप के साथ ध्यान (Meditation) का अभ्यास किया जाता है। आचार्य श्री अपनी कृति 'ओम् योग ध्यान' में ध्यान के 8 अवस्थायों का पूर्ण वर्णन करते हुए बताते हैं कि यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, प्रत्याहार, ध्यान और समाधि पूर्वक इन कर्तव्यों के पालन से ही यति की निर्विकृप समाधि सम्भव है। ॐ ओम को प्रणव मंत्र भी कहा जाता है, यह सभी मंत्रों का मूल बीज है। 'ॐ' जिसमे पाँचों परमेष्ठी समाहित हैं, यह ब्रह्मांड की आद्य ध्वनि भी मानी जाती है। इसके उच्चारण से

मन शांत होता है और चित्त एकाग्र होता है और जो आत्मा तथा शरीर दोनों को स्वस्थ्य रखती है। ध्यान का अर्थ है मन को एक बिंदु पर स्थिर करना। योग का अर्थ है आत्मा का परमात्मा से मिलन। जब ॐ ध्यान और योग का संयोजन होता है, तो इसे 'ओम् योग ध्यान' कहा जाता है। इन 'ओम् योग ध्यान' में मन, वचन और काय की 16 सहायक क्रियाओं (लक्ष्य योग, आसन योग, मुद्रा योग, हस्त योग, श्वांस योग, ओंकार योग, मंत्रोचारण योग, क्षमा योग, पञ्च धारणा योग, ध्यान योग, शुभ भावना योग, निश्चिन्त्य योग, आनंद योग, जयकार योग, उष्ण योग और शीत योग) का विस्तृत वर्णन आचार्य श्री ने पद्य और गद्य रूप में चित्रों के साथ अपनी कृति में किया है जो कि किसी भी साधक के लिए लाभकारी है और ध्यान करने में उपयोगी है।

'ओम् योग ध्यान' के लाभ चिंतन करते हुए आचार्य श्री कहते है -

- मानसिक शांति और तनाव में कमी
- एकाग्रता और स्मरण शक्ति में वृद्धि
- आत्म-चेतना का विकास
- आध्यात्मिक उन्नति की अनुभूति

अभ्यास कैसे करें?

आचार्य आर्जवसागर जी के सरल दैनिक अभ्यास विधि 'ओम् योग ध्यान' को निम्नानुसार संपन्न किया जा सकता है।

1. तैयारी (5 मिनट)

- शांत, स्वच्छ और हवादार स्थान चुनें।
- सुबह ब्रह्ममुहूर्त (सूर्योदय से पहले) या शाम को सूर्यास्त के समय उपयुक्त है।
- पीठ सीधी रखकर सुखासन या पद्मासन में बैठें।
- आँखें हल्के से बंद करें, शरीर को ढीला छोड़ें।

2. श्वास-जागरुकता (10 मिनट)

- गहरी, धीमी और लयबद्ध श्वास लें और छोड़ें।
- केवल श्वास के आने-जाने को देखना है, उसे नियंत्रित नहीं करना है।
- विचार आएँ तो बस उन्हें वैराग्य से आते-जाते देखें, उनमें उलझें नहीं।

3. आत्म-स्मरण (10 मिनट)

- मन में बार-बार भाव लाएँ 'मैं देह नहीं, मैं निश्चय से शुद्ध आत्मा हूँ।'
- णमोकार महामंत्र का जाप धीमे स्वर में या 27 श्वासोच्छ्वास के साथ करें।
- आत्मा के गुण (ज्ञान, दर्शन, सुख) पर ध्यान केंद्रित करें।

- देह, मन और बाहरी संसार से अलग होने की अनुभूति करें।

4. समता भावना (5 मिनट)

- अपने मन में सभी जीवों के प्रति मैत्री, करुणा, क्षमा और समता भाव लाएँ।
- क्रोध, राग-द्वेष को त्याग कर सभी जीव सुखी हों का भाव रखें।

5. समापन (2 मिनट)

- ध्यान समाप्त करते हुए धीरे-धीरे आँखें खोलें।
- दिनभर के लिए वैराग्य के साथ आत्म-स्मरण बनाए रखने का संकल्प लें।

नियमित अभ्यास से एकाग्रता, मानसिक शांति, आत्मबल और विवेक में वृद्धि होती है। भावनाएँ / अवस्थाएँ जो ओम् योग ध्यान में आती हैं-

- 'ओम्' की ध्वनि में एकाग्रता (धारणा) – मन ध्यान केंद्रित हो जाए।
- मंत्र जाप के माध्यम से ध्यान- वाणी-मनो योग से 'ओम्' का उच्चारण, श्रवण, उसके स्पंदन का अनुभव करना।
- ध्वनि का आलम्बन- 'प्रणव' भाव, ब्रह्म-भाव।
- मन के विकारों (विचार-भ्रम, राग-द्वेष आदि) से मुक्ति का अनुभव।
- आत्मिक शांति, अस्मिता लोप अनुभव, अहंकार की क्षीणता।
- प्रेम, समत्व, श्रद्धा, निःस्वार्थ भाव, एकत्व का अनुभव।
- स्वरूपज्ञान – आत्मा से परमात्मा का बोध।

अगर 'ओम् योग ध्यान' को सम्यक् ध्यान शतक जैसा अनुभव किया जावे तो 'धर्मध्यान' या 'शुक्ल ध्यान' की तरह 'ओम्' का आलम्बन, विषमता से हटकर आत्म-विकास और मोक्ष की ओर ले जाने वाला ध्यान हो सकता है। 'ओम् योग ध्यान' से हमारे मन की एकाग्रता बढ़ेगी और निश्चित रूप से हम सभी एक दिन अपने मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। इसी भावना के साथ ओम् योग प्रणेता प. पू. आचार्य गुरुवर श्री 108 आर्जवसागर जी के चरणों में ओम् योग ध्यान की उपलब्धि की भावना सह त्रिबार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

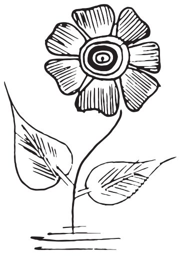

श्रमण आचार्य परम्परा में आचार्य आर्जवसागर व्यक्तित्व और सृजन

-डॉ. बारेलाल जैन, रीवा

जन-जन के कल्याण हेतु साधनारत आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज के ''व्यक्तित्व एवं सृजन'' विषय पर लेखक के विचार पठनीय एवं सराहनीय हैं।

-संपादक

भारतीय ज्ञान परम्परा में श्रमण संस्कृति प्राचीनतम संस्कृति है। 24 तीर्थंकरों के आराध्यक आचार्य कुन्दकुन्द से लेकर वर्तमान में आचार्य आर्जव सागर महाराज तक एक लम्बी श्रेष्ठ मुनि परम्परा है। इस परम्परा ने भगवान महावीर के पंच सिद्धान्तों के चरण चिन्हों पर चलकर अपना जीवन सार्थक किया है साथ ही लोक कल्याण की भावना में सम्पूर्ण सृष्टि का भी भला किया है। इन महामुनियों ने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, संयम, शौच और अचौर्य महाव्रतों को पालकर सारे संसार के जीवों को बताया है कि यह संसार में जन्म लेने वाले जीव के साथ रहने वाले पदार्थ एक दृष्टि से नश्वर हैं, मिथ्यात्व से भरा हुआ है। यहाँ अपार दुःख ही दुःख समाया हुआ है। कर्म के आधार पर यह संसारी जीव अनेक योनियों में भटकता हुआ मनुष्य योनि में आता है जो सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। यहीं से मुक्तिगामी रास्ते बनते हैं। मुनि आचार्य अपने ध्यान, योग, साधना, संयम से परिषहों से जीतकर जितेन्द्रिय होने की कला में निष्णात हुए हैं। आचार्य आर्जवसागर महाराज भी इसी परम्परा के अपराजेय साधक हैं। आपने अपने पूर्व नाम पारसचन्द जैन नाम को सार्थक करते हुए उच्च शिक्षा के बाद सन् 1984 में ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सन् 1985 में सातवीं प्रतिमा के बाद सन् 1985 में ही क्षुल्लक दीक्षा और फिर सन् 1987 में ऐलक दीक्षा लेकर सार्थक किया है। शीघ्र ही सन् 1988 में आपने दीक्षा गुरु परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी से मुनि दीक्षा लेकर श्रमण पंथ को धारण कर स्व जीवन के साथ लोक जीवन को सार्थक किया है। आपने सन् 2015 में आचार्य श्री सीमंधर सागर महाराज जी के आशीर्वाद से उनकी सल्लेखना के पूर्व उनसे आचार्य पद ग्रहण कर अपने जीवन को उन्नत बनाया है। श्रमण साधक की दिनचर्या सभी जानते हैं। कवि सरमनलाल 'सरस' ने एक चित्र खींचा है-

जिनके तन पर तनिक न धागा, तृणवत् सभी तजा है।
जिनके पिच्छि कमंडलु में ही, सारा संसार बसा है।।[1]

जीवन से मुक्ति की यह महायात्रा इतनी आसान नहीं है जितना हम सब समझते हैं। कड़कड़ाती शीत में नदियों के किनारे, चिलचिलाती धूप में पत्थरों पर बैठकर साधना करना इन मुनियों से ही सीखा जा सकता है। आचार्य आर्जव सागर जी ने अपनी जीवन साधना के स्वानुभव में अपने सृजनात्मक कृतित्व से आपने धर्म भावना शतक, जैनागम संस्कार, तीर्थोदय काव्य, सम्यक् ध्यान शतक, आर्जव वाणी, जैन शासन का हृदय, गुरुगुण महिमा काव्य, ज्ञानवर्धन काव्य, लोक कल्याण विधान, अध्यात्म समयोदय, आत्मोद्धार शतक, विनयांजलि, विद्यासागर वंदनाष्टक, विद्यागुरु विनयांजलि, गुरु विद्या सागर की छवि जैसी रचनाएँ वर्तमान समाज को

कल्याणक रूप में दी हैं। आपने गोम्मटेश थुदि, इष्टोपदेश, समाधि तंत्र, तत्त्वसार, भक्तामर स्तोत्र आदि पद्यानुवाद कृतियाँ भी दिशाबोध के लिए समाज के बीच सृजित की हैं। 11 सितम्बर सन् 1967 से लेकर अब तक आपकी मोक्षमार्ग व श्रमण साधना अपराजेय रूप में निर्विवाद चल रही है। 'सम्यक् ध्यान शतक' रचना दोहा छंद में कर्मबंधन की मुक्ति के लिए परपदार्थ से विरक्तता और स्व से जुड़ाव के भाव को बतलाती है। इस कृति में भाव और कला पक्ष की सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ आध्यात्मिक रसानुभूति का परम आनन्द प्राप्त होता है। आपने अपनी साधना को त्रियोग्य की सम्यक् समन्वयता में शुक्ल ध्यान पर केन्द्रित किया है। ध्यान का स्वरूप समझाते हुए आप कहते है-

सम्यक् निज उपयोग हो, शुभ अरु शुद्ध महान।
ध्यान जगे वह शुक्ल जब, मिलता केवलज्ञान॥[2]

आपने अपनी जीवन यात्रा, अपनी साधना द्वारा स्व जीवन को समुन्नत कर लोक जीवन को भी उदात्ता प्रदत्त की है। आपका व्यक्तित्व और रचना संसार के समग्र साधकों को साधना पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। आपने अपने व्यक्तित्व के निर्माण में और ज्ञान साधना के सृजन में एक समन्वय का दृष्टिकोण रखकर गंभीर भावों को सरलता के साथ उद्घाटित किया है। भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ सदैव एक से बढ़कर एक तपोनिष्ठ मुनि, ऋषि-महर्षि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने समाज, देश और संस्कृति के उन्नयन में अहिंसा, करुणा, अपरिग्रह, विवेक, क्षमा, तपस्या, सत्य, शुद्धता, संयम, ध्यान, साधना के माध्यम से अपने व्यक्तित्व और कृतित्व को सजाया-संवारा है। आज का समय मानव मूल्यों के जिस संकट के दौर से गुजर रहा है वे तमाम विसंगतियाँ मानव जीवन को अपना ग्रास बना रही हैं। भौतिकता के कीचड़ में फंसी सृष्टि आकुल-व्याकुल होकर पीर के समुद्र में तैर रही है ऐसे पीड़ादायक समय को आपकी वाणी से धर्म, दर्शन, कर्म, संस्कृति तथा आध्यात्म का पावन अमृत निसृत हो रहा है।[3]

आपका कृतित्व हिन्दी, कन्नड़, तमिल, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत आदि भाषाओं में सृजित है यानी साहित्य और व्यक्तित्व एक दूसरे का पूरक बना श्रमण समाज के साथ सत् संगति समाज को लोक कल्याण की दिशा बोध दे रहा है। जहाँ न पहुंचे रवि, वहाँ पहुंचे कवि और जहाँ न पहुंचे कवि वहाँ पहुंचे स्वानुभवी। आप शाकाहार सम्मेलनों और विद्वत् संगोष्ठियों के माध्यम से स्वयं भी सारतत्व ग्रहण कर रहे है और सच्चे सुख की प्रभावना इस संसार में लोगों को करा रहे हैं। सच भी है सच्चा साधु स्वयं तो तिरता ही है वह दूसरों को भी पार ले जाता है। आपकी रचना ओम् योग ध्यान कृति में आत्मा से परमात्मा की ओर जाने के लिए ध्यान रूपी अग्नि से कर्मों का नाश करने की बात की गई है। कारण स्पष्ट है कि मुक्ति के लिए ध्यान अतिआवश्यक है और ध्यान में आपने यम, नियम आदि के साथ सोलह प्रकार के योगों का पवित्र चिंतन इस कृति में पाठक को दिया है। ध्यान को गहराई में ले जाकर अपूर्व आनन्द व शांति का अनुभव कराया है-

पंच तरह की धारणा, करता ध्यानी होय।
पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और तत्व संजोय॥[4]

पंचधारणों के चिंतन में आप मन को एकाग्र कर, भाव में निर्मलता लाकर, कर्मो की निर्जरा कर, पुण्य का सम्पादन करते हैं साथ ही मन में अपूर्व शांति और आत्म में विशुद्धि लाते हैं। आपका कहना है-

वीतराग जिन शरण में, सर्व कर्म कट जायँ।
मोक्ष सुपद का लाभ हो, समता दल खिल जायँ॥[5]

आज मनुष्य का आस्तित्व भययुक्त है। मनुष्य मानवता से सुदूर हटता जा रहा है। उसके पास कोई निश्चित दिशा नहीं है। ऐसे कठिन युग में वीतरागी निर्ग्रन्थ दिगम्बर जैन महाश्रमण आचार्य आर्जवसागर जी हम सब के बीच हम सब का श्रमण चर्या में ध्यान के माध्यम से मार्गदर्शन कर रहे हैं। इन महामना, निस्पृह कर्मयोगी, महासाधक का काव्य सृजन हमें सुखद परिवर्तन का संकेत देता है। सौम्य-समता, बन्धुत्व और विश्व मानवता की दिव्य सम्भावना की प्रतिष्ठापना करने वाले संत कवि की योग साधना/ध्यान साधना हम सबको तमाम उलझनो से छुटकारा दिलाने का मार्ग प्रशस्त करती है-

निष्कलंक-त्रयकाल-निज, शुद्ध निरंजन एक।
चिन्तन रूपातीत है, ध्यान करें मुनि नेक॥[6]

आपके व्यक्तित्व और सृजन में हमें प्रतिभा, अनुभव, परिस्थितियों और उनके वंशज से प्राप्त संस्कारों में निरन्तर जीने में जीवन मूल्यों का सृजन, मानव मूल्यों का संगम हो रहा है। साथ ही, अतंरग मनोविकारों का विरेचन भी होता है। श्रमण मुनि आचार्य आर्जवसागर द्वारा वसुधा पर बसे जीवों, प्रकृति और पर्यावरण के लिए कल्याणकारी संदेश हमें मिल रहे है।

वसुधैव कुटुंबकम् के समान एकता में सर्वे भन्तु सुखिनः की प्रबल भावना, व्यापक जीवन दर्शन, अनुभूति की गहनता, मानवीय विकास के प्रति अटूट आस्था तथा महान उद्देश्य से युक्त आपका साहित्य निश्चय ही अपना शाश्वत मूल्य रखता है क्योंकि इसी साहित्य के जरिए हर साहित्यकार हर युग में अपनी सार्थकता प्रमाणित करता है। कहा गया है-

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है॥[7]

लोकहित एवं लोक आनन्द ही साहित्य का परम लक्ष्य है। इस लोकहित और लोक आनन्द के बीच यदि सृजनकार किसी भी रूप में अपनी आत्मा को परमात्मा के ध्यान में लगाता है तो वह सच्चे साहित्यकार के साथ सच्चा श्रमण आचार्य भी माना जाता है। भारतीय संस्कृति में अंतिम लक्ष्य जीवन का मुक्त होना है और इस मुक्ति के लिए हमारे कार्य जितने बेहतरीन होगें, हमारा पथ उतना ही सहज सरल और सार्थक होगा। महामुनि आचार्य आर्जव सागर जी ऐसे ही सृजनकार हैं जिन्होंने आडम्बर विहीन निडर और न्याय के साथ योग साधना में तत्पर हैं या कहिए ध्यान साधना में लीन होकर लोकमंगल की धारणा को वे पुष्ट कर रहे हैं। ध्यान योग तपस्या के आधार पर ही मानव सत्य की खोज कर सकता है। राग द्वेष से परे, एकाग्र मन से जो चिंतन करता है वही शुभ ध्यान है। भगवान महावीर स्वामी के अनुसार शुक्ल ध्यान की प्राप्ति कषाय रहित, श्रुत ज्ञानी और केवलज्ञानी को

ही प्राप्त होती है।[8] इसी प्रकार संत कवि दादू दयाल ने ध्यान के लिए मन की निर्मलता पर विशेष बल दिया है। उनके अनुसार मलिन ह्रदय का ध्यान तो बगुले के समान है। संत कवि दादू दयाल सच्चे ध्यान के लिए अन्तर गति में मन स्थापना का निर्देश देते हैं। संत सुन्दरदास भी ज्योति स्वरूप ध्यान को रूपस्थ ध्यान तथा निराकार ध्यान को रूपातीत ध्यान की संज्ञा देते है। ऐसे ही आचार्य आर्जवसागर महाराज भी अनेक प्रकार की भावनाओं का अद्वितीय चिंतन कर ध्यान को गहराई में ले जाकर अपूर्व आनन्द और शांति का अनुभव कराते हैं। ध्यान आज की आवश्यकता है। इसके माध्यम से हजारों रोग और व्याधियाँ दूर हो रही हैं। आचार्य श्री कहते हैं-

अपने कर को ऊपर लाओ, लक्ष्य योग में प्रभु को ध्याओ।
ऊर्ध्वगामिनी ऊर्जा मिलती, शक्ति का संचार कराओ॥[9]

श्रमण साधना भारतीय ज्ञान परम्परा की विरासत है। यहाँ योगी साधकों ने अपने मन को स्थिर करके उसे महामंत्र मानकर योग और ध्यान से जीवन के अंतिम लक्ष्य सिद्ध अवस्था को प्राप्त करने का पुरुषार्थ किया है। यह साधना निर्विकार और निष्कलंक है। यहाँ संसार से रहित होकर, आत्मा से सहित होकर जो योग ध्यान साधना है वह शाश्वत सुख को पाथेय देती है। आचार्य आर्जवसागर जी अपनी योग और ध्यान साधना में निरन्तर ऊँचाईयाँ प्राप्त करें साथ ही उस शाश्वत सुख का रसपान कैसे करें ऐसा बतलाते हुए हम सभी श्रावकों को साधना पथ के राहियों को ज्ञानामृत पिलाते रहें यही शुभ भावना है।

संदर्भ सूची-

1. जैन, डॉ. बारेलाल, हास्य कवि सरमनलाल सरस, व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 32 ।
2. आचार्य आर्जवसागर, सम्यक् ध्यान शतक, पृ. 36 ।
3. जैन, डॉ. बारेलाल, हिन्दी साहित्य की संत काव्य परम्परा के परिप्रेक्ष्य में आचार्य विद्यासागर के कृतित्व का अनुशीलन, पृ. xiii ।
4. आचार्य आर्जवसागर, ओम् योग ध्यान (संपादन डॉ. ऋषिका जैन) पृ. 15 ।
5. आचार्य आर्जवसागर, ओम् योग ध्यान (संपादन डॉ. ऋषिका जैन) पृ. 42।
6. आचार्य आर्जवसागर, सम्यक् ध्यान शतक, पृ. 31।
7. दिवेद्वी युगीन कविता में नई जीवन दृष्टि, डॉ. उदय नारायण मिश्रा, पृ. 81 ।
8. जैन पवन कुमार, महावीर वाणी के आलोक में हिन्दी का संत काव्य, पृ. 267 ।
9. आचार्य आर्जवसागर, ओम् योग ध्यान, पृ. 7 ।

हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

जो विषयों से उदास हैं,
वे परमेष्ठी के दास हैं।
-आचार्य श्री

तीर्थोदय काव्य में रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग के स्वरूप का विवेचन

-डॉ. श्रीमती अल्पना जैन मोदी, ग्वालियर

प्रस्तुत लेख में आचार्य श्री आर्जवसागर महाराज की अनुपम कृति ''तीर्थोदय काव्य'' के रत्नत्रयमयी मोक्षमार्ग का सांगोपांग विवेचन मनोयोगपूर्वक गद्यमय किया गया है।

-संपादक

रागादि दोष मलवर्जित को नमूँ मैं। हो गुण अनन्त के कोष, अतः नमूँ मैं॥
ज्ञानाम्बुधि का सत् नीर तुम्हें नमूँ मैं। गुरु आर्जवसागर पाद सतत् नमूँ मैं॥

संसार के सभी प्राणी सुख चाहते हैं। सच्चा सुख निराकुलता में है। निराकुलता मोक्ष में ही है। जिस प्रकार अणु रूप बीज में विराट वृक्ष होने की शक्ति विद्यमान है, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति तभी हो सकती है, जब उसे अनुकूल पानी, प्रकाश व पवन की उपलब्धि होती है। उसी प्रकार आत्मा में अनादिकाल से शक्ति रूप विद्यमान अनन्तदर्शन, ज्ञान, सुख, वीर्य रूप अनन्त चतुष्टय को अभिव्यक्त करने के लिए रत्नत्रयी साधना पथ जैनागम में बताया गया है। सच्चे सुख का अभिलाषी रत्नत्रय का पथ अपनाकर मोक्ष प्राप्त करता है। जीव का परम लक्ष्य मोक्ष है। सर्वप्रथम मोक्ष क्या है? इसके स्वरूप का विश्लेषण स्पष्ट करते हैं।

मोक्ष का अर्थ मुक्त होना है। मोक्ष शब्द संस्कृत के मोक्ष-असने धातु से बना है। जिसका अर्थ है छूटना या नष्ट होना। अतः समस्त कर्मों का जीवात्मा से आत्यान्तिक रूप से पृथक् होना, समूल उच्छेद होना मोक्ष है।[1] बन्धन से मुक्ति को मोक्ष कहते हैं। संसारी आत्मा कर्मों से बंध युक्त होता है। अतः आत्मा और कर्म बन्ध का पृथक्-पृथक् हो जाना ही मोक्ष है। आत्यान्तिक-क्षय का अर्थ है, जहाँ नये कर्मों के आगमन की कोई सम्भावना न हो और पुरातन कर्मों का पूर्णतया नाश हुआ हो। संवर द्वारा नवीन कर्मों का आगमन रोकने तथा निरन्तर चलने वाली निर्जरा से यह स्थिति उत्पन्न होती है। इसी को परिलक्षित करते हुए पूज्य आचार्य श्री उमास्वामी जी ने मोक्ष का लक्षण बतलाते हुए लिखा है- बन्ध हेत्व भाव निर्जराभ्यां कृत्स्न कर्म विप्रमोक्षो मोक्षः।[2] अर्थात् बन्ध के हेतुओं के अभाव और निर्जरा द्वारा समस्त कर्मों का आत्मा से आत्यान्तिक क्षय होना या अलग होना ही मोक्ष है।

कर्मों का क्षय होते ही जीवात्मा अपनी स्वाभाविक अवस्था में परिणत हो जाती है। वस्तुतः समस्त कर्मों के क्षय से होने वाला आत्म लाभ ही मोक्ष है। कहा भी है-

आत्म लाभं विदुर्मोक्षं जीवस्यान्तर्मलक्षयात्।
नाभावं नाप्य चैतन्यं न चैतन्यमनर्थकम्॥[3]

मोक्ष उस स्थिति का नाम है, जहाँ न जन्म है, न मरण है, न जरा है, न रोग है, न सुख है, न भूख है, न प्यास है। मोक्ष में केवल आत्म-रमण है, आत्मास्वरूप में अवस्थित होना ही परम आनन्ददायक माना गया है। जैन दर्शन में मोक्ष का अर्थ चैतन्य गुणों की प्राप्ति से है, क्योंकि चैतन्य आदि जीव के स्वाभाविक गुण हैं, उनका कभी अभाव नहीं हो सकता है। मोक्ष आत्मा की पूर्ण शुद्ध अवस्था मानी गई है तथा मोक्षदशा में भी प्रत्येक आत्मा की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार की गई है। मोक्ष आत्म-स्वरूप की प्राप्ति है।[4] मोक्ष आत्मा की परम और पूर्ण

अवस्था है। सच्चे सुख की अभिलाषी रत्नत्रय का पथ अपना कर मोक्ष प्राप्त करता है। सच्चे देव, शास्त्र और गुरु ये तीन रत्न हैं। इनके निमित्त से रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग अपनाकर भव्य जीव अनन्तानंत काल के लिए शाश्वत् सुख प्राप्त कर सकते हैं। पूज्य आचार्य श्री जी ने तीर्थोदय काव्य में अपने भावों को अभिव्यक्त करते हुए 25, 27 और 29 वें काव्य में सच्चे देव, शास्त्र और गुरु की सरल बोधगम्य व्याख्या की है।

जैनागम में रत्नत्रयी साधना पथ बतलाया गया है। रत्नत्रय की पूर्णता ही मोक्षमार्ग है। यह रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग स्वभावतः निर्मल है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रूप रत्नत्रय प्राप्ति की भावना मोक्षमार्ग प्राप्ति की समझना चाहिए। तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय का प्रथम सूत्र है- सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः॥ अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों की एकात्मकता ही मोक्षमार्ग है। यहाँ मार्ग से अभिप्राय मोक्ष शाश्वत् अविनाशी सुख है। मार्ग अपने अभिप्रेत (इष्ट) प्रदेश की प्राप्ति का निरूपद्रव उपाय विद्वानों के द्वारा (मोक्ष का) मार्ग माना गया है। मोक्ष प्राप्ति में रत्नत्रय प्रधान कारण है। पूज्य आचार्य श्री जी ने भी मोक्ष मार्ग का वर्णन करते हुए लिखा है-

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण यह मोक्षमार्ग कहलाता है।

दर्श ज्ञान, चारित जहाँ, मोक्षमार्ग शुभ जान।
शुद्ध-आत्म के ध्यान में, पाते पद निर्वाण॥[5]

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों को रत्नत्रय कहते हैं। यही मोक्षमार्ग है। परन्तु इन तीनों में से कोई एक या दो आदि पृथक्-पृथक् रहकर मोक्ष के कारण नहीं हैं बल्कि समुदित रूप से एक रस होकर ही ये तीनों युगपत मोक्षमार्ग है। सम्यग्दर्शन धर्म का मूल स्तम्भ है। सम्यग्दर्शन के अभाव में न तो ज्ञान सम्यक् होता है, न चारित्र ही। पूज्य आचार्य श्री ने तीर्थोदय काव्य में बड़े ही सुन्दर शब्दों में इसकी अभिव्यक्ति की है। जो इस प्रकार है-

सद्दर्शन बिन ज्ञान चरण वे, समीचीन न बनते हैं।
चाहे ज्ञान अंग ग्यारह का, मिथ्या उसको कहते हैं॥
सम्यग्दर्शन जिस पल होता, उसी समय वे ज्ञान चरण।
सम्यक् बनते ज्योत, तपन सम, रत्नत्रय की मिले शरण॥[6]

आचार्यों ने तीन मूढ़ता, षट अनायतन, अष्ट शंकादि दोष ओर अष्ट मद ऐसे पच्चीस दोषों से रहित तथा अष्ट अंगों से सहित वीतराग देव, शास्त्र और गुरु पर श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन बतलाया है। तीर्थोदय काव्य में भी पूज्य आचार्य श्री जी ने यही भाव अभिव्यक्ति किये हैं। यथा-

वीतरागमय देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धा जब भवि धारे।
तीन मूढ़ता षट् अनायतन, तज अपूर्व गुण-छवि धारे॥
अष्ट अंग सह वसु मद तजकर, प्रशमादिक गुण को पाये।
सम्यग्दर्शी बनता वह भवि, शीघ्र वही शिव को पाये॥[7]

तीर्थोदय काव्य के द्वितीय सोपान समीचीन दृष्टि शीर्षक में सम्यग्दर्शन का सविस्तार वर्णन किया गया

है। यह सोलहकारण भावना की प्रथम भावना दर्शन विशुद्धि के अन्तर्गत निहित है। सम्यग्दर्शन के साथ उत्पन्न हुआ ज्ञान आत्म विकास का कारण होता है। स्व-पर का भेद विज्ञान यथार्थता सम्यग्ज्ञान है। श्री समन्तभद्राचार्य जी ने लिखा है कि-

अन्युनमनतिरिक्तं याथातथ्यं बिना च विपरीतात्।
निसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः॥

अर्थात्- जो ज्ञान वस्तु के स्वरूप को न्यूनता रहित, अधिकता रहित, विपरीतता रहित और सन्देह रहित जैसे को तैसा जानता है, उस ज्ञान को आगमज्ञ सम्यग्ज्ञान कहते हैं।[8] श्री नेमीचन्द्राचार्य जी कहते हैं-

संशय-विमोह-विब्भम्, विवज्जियं अप्पपरसरुवस्स।
गहणं सम्मं णाणं सायार मणेयभेयं च॥

अर्थात् आत्मा और पर वस्तुओं के स्वरूप का संशय विपर्यय और अनध्यवसाय रहित तथा आकार सहित यह घट है, यह पट है, इत्यादि विकल्प सहित जैसा का तैसा जानना सम्यग्ज्ञान कहलाता है।[9]

सम्यक् चारित्र-हिंसादि पंच पाप क्रिया से दूर हटकर दान, पूजा पंच परमेष्ठी के ध्यानादिक में प्रवृत्त होने को जिनेन्द्र देव के द्वारा कहा हुआ व्रत, समिति और गुप्ति रूप सम्यक् चारित्र जानना चाहिए।

षोडसकारण भावनाओं में प्रथम तीन दर्शनविशुद्धि, विनय सम्पन्नता और शीलव्रतेष्वनतिचार भावनाओं में रत्नत्रय को समाविष्ट किया गया है। इन भावनाओं का चिन्तवन करने से भव्यों को निश्चय व व्यवहार रूप मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है। जिस क्रम से इन भावनाओं का वर्णन है वह सार्थक एवं सोद्देश्य है। यथा विशुद्ध दर्शन के पश्चात् मान को मारकर विनय को जब तक धारण नहीं किया जायेगा, तब तक शील एवं व्रतों का पालन असंभव है।

षोडसकारण भावनाओं में दर्शन विशुद्धि प्रथम भावना के अनन्त ऑचल में शेष पन्द्रह भावनाएँ जुड़कर उसको महतीय बनाती हैं। पर के कल्याण की भावना में बंधन को स्वीकारना पड़ता है। परन्तु इस बंधन की फलश्रुति मुक्ति का सोपान है। सम्पूर्ण तीर्थोदय काव्य कृति में मोक्षमार्ग का विवेचन पूज्य गुरुवर आचार्य श्री जी ने किया है, और विनय मोक्ष का द्वार बतलाते हुए लिखा है कि-

विनय मोक्ष का द्वार कहा है, जिसके बिन ना धर्म मिले।
जहाँ विनय हो मोक्षमार्ग की, वहीं निजातम शर्म मिले॥
सद्दर्शी के विनय-भाव से, आगम-बोध जहाँ मिलता।
सदाचार भी गुणी जनों में, सुखदा पूर्ण वहाँ खिलता॥ 217॥

प्रज्ञाशील मोक्षमार्गी पूज्य गुरुवर आचार्य श्री जी के प्रज्ञापैनी दृष्टि ने मोक्षमार्ग पर चलने की प्रेरणात्मक सुन्दर अभिव्यक्ति काव्य में की है जिसकी अभिव्यंजना अभिदिष्ट है-

वीतराग बन सदा ध्यान से, आतम को पावन करना।
मोक्षमार्ग में चलना मुनि बन, आतम का अनुभव करना॥ 182॥
कर्म शुभाशुभ पर श्रद्धा रख, नहीं चाहते भव-सुख को।

कठिन-कठिन पथ चले सुदर्शी, सदा काटते भव-दुख को॥ 187॥
अभाव रवि का होता है जब, नहीं मार्ग है दिख सकता।
ज्ञान बिना क्या मोक्षमार्ग में, कभी कौन है चल सकता॥ 222॥
मोक्षमार्ग में चलकर भविजन, त्याग मार्ग को अपनाते॥ 370॥
कर्म दूर हों धर्म साथ हो, यही लक्ष्य जिनका होता।
रत्नत्रय की निर्मलता हो, सही तपस्वी वह होता॥ 389॥
परिषह सहते सकल रूप से, मोक्षमार्ग में शोभित हैं॥ 575॥
मोक्ष लाभ हो लक्ष्य हमारा, रत्नत्रय से मिले परम॥ 142॥
वीतराग हैं देव-शास्त्र-गुरु, शरण वही हैं रक्षक हैं।
वही हमारे परमपिता हैं, मोक्षमार्ग के शिक्षक हैं॥ 358॥

कर्मों और संस्कारों की निवृत्ति में षोडसकारण भावनाएँ साधन निमित्त बनती है। उपादान रूप में पुरुषार्थ कार्य करता है। साधन के प्रभाव से पुरुषार्थ द्वारा अन्ततः शिव पद, परम पद पा सकते हैँ। जिससे जीवन धन्य-धन्य, कृत-कृत हो सकता है। रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग पर चलने से रत्नत्रय निधि की उपलब्धि हो सकती है। रत्नों की उपासना ही रत्नों को प्रदान करती है। रत्नत्रयधारी पूज्य आचार्य श्री रत्नत्रय के सम्बन्ध में अपने मनोभावों को व्यक्ति करते हुए सहज, ग्राह्य एवं बोधगम्य शब्दों में कुछ पद प्रस्तुत करते हैं जो दृष्टव्य है-

रत्नत्रयमय विश्व-धर्म की, प्रभावना इस जग में हो।
कण-कण में इस पृथ्वी पर, वह दया-भाव मग-मग में हो॥ 609॥
प्राणों से भी अधिक कीमती, रत्नत्रय से प्रेम करे॥ 631॥
रत्नत्रय सद्गुण रत्नों से, आत्म-खजाना भरना है॥ 184॥
सोलहकारण भावन से शुभ - रत्नत्रय निर्मल बनता।
मूलगुणों से उत्तर गुण, वे बढ़ें मार्ग परिमल बनता॥
शुभ से शुद्ध बने उपयोगी, मुनि चेतन में रम जाएं।
तीर्थोदय से मिले मोक्ष - पद, उसी मोक्ष को हम जाएं॥ 640॥

तीर्थोदय काव्य में पूज्य आचार्य श्री जी ने गागर में सागर सम या इससे भी कहीं अधिक बिन्दु में सिन्धुवत सारभूत रत्नत्रय मोक्षमार्ग भरा है। मोक्ष पद पर आरूढ़ होने हेतु विभिन्न सोपानों से होकर आगे बढ़ना होता है और अनंत जन्मों के पाप कर्मों के क्षय के लिए भावनएँ भानी पड़ती हैं। तीर्थोदय काव्य में तीर्थंकर प्रकृति का बंध कराने वाली सोलहकारण भावनाओं का क्रमबद्ध वर्णन पूज्य आचार्य श्री जी ने मुख्यता से किया है। काव्यकार मंगलाचरण प्रथम काव्य में ही ग्रंथ प्रतिज्ञा करते हुए लिखते हैं-

सोलह कारण तीर्थ - भावना, भाऊँ कर्म नशाने को।
यह तीर्थोदय काव्य लिखूँ मैं, भव - सुख तज, शिव पाने को॥ 1॥

निम्नगा (सरिता) स्रोत से प्रारम्भ होकर जिस प्रकार क्रम-क्रम से विस्तार करती हुई अनेकशः जल

प्रपातों को अपने अंक में समाहित कर विराट अथाह उदधि रूप परिणत हो जाती है, उसी प्रकार तीर्थोदय काव्य कृति मुक्ति पथ के मुख्यतः 6 सोपानों, 8 शीर्षक, 90 उपशीर्षक तथा 700 पद्यों (ज्ञानोदय छन्द के 609 एवं दोहे के 91 पद्य) में प्रवाहमान हुई है। विशिष्टतः प्रथम सोपान मंगल भूमिका शीर्षक, 2 उपशीर्षक, मंगलाचरण की मंगल भूमिका और सोलहकारण भावनाओं की महिमा से प्रारम्भ हुआ है। मन में सम्यक्त्व के बीज वपन मोक्ष महल को सुदृढ़ करने की दृष्टि से, द्वितीय सोपान समीचीन दृष्टि, शीर्षक 23 उपशीर्षकों में प्रथम भावना दर्शन विशुद्धि-सम्यग्दर्शन का विशद विवेचन किया गया है। मोक्ष द्वार हेतु तृतीय सोपान सम्यक्वृत्ति शीर्षक 23 उपशीर्षकों में द्वितीय विनय सम्पन्नता और तृतीय शीलव्रतेषु अनतिचार भावना अन्तर्गत विनय, अणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत, श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ आदि का सांगोपांग विवेचन किया गया है। चतुर्थ सोपान विमोचन दृष्टि शीर्षक 12 उपशीर्षकों में चतुर्थ से नवम् भावना के अन्तर्गत ज्ञान, संवेग, त्याग, तप, साधु-समाधि, वैयावृत्य को कवित्व शक्ति के द्वारा प्रभावी स्वरूप प्रदान कर सुन्दर वर्णन किया गया है। पंचम् सोपान सद्भक्ति शीर्षक 13 उपशीर्षकों में दसवीं से तेरहवीं भावना अर्हद् आचार्य, बहुश्रुत, प्रवचन भक्ति को पद्यात्मक गेयता प्रदान की है। अर्हद् भक्ति में समवशरण के सौन्दर्य का, आचार्य भक्ति में मुनियों के दश धर्म व पंचमहाव्रतादि, प्रवचन भक्ति में चारों अनुयोगों का, सुन्दर सरल विशद् काव्यमय चित्रण विद्यमान है। षष्टम् सोपान समुन्नित शीर्षक 64 शीर्षकों में चौदहवीं से सोलहवीं भावना के अन्तर्गत मुनियों के षड्ावश्यक आदि, निश्चय-व्यवहार का सम्बन्ध, मार्ग प्रभावना, साधर्मी वात्सल्य का सहज बोधगम्य वर्णन है। काव्य का उपसंहार शीर्षक 5 उपशीर्षकों सिद्धात्मा, षोड्सकारण व्रत की विधि, सार एवं उद्देश्य को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर अन्तिम घोषणा के साथ पूर्णता प्रदान की गई है। अन्त में प्रशस्ति में रचनाकाल स्थान को वर्णित करते हुए सार्थक भावना का उल्लेख भी किया गया है। तीर्थोदय काव्य में चारों अनुयोगों की आवश्यक सामग्री समुचित रूप से प्रयुक्त हुई है। मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों, प्रतीकों प्रसंगों के यथेष्ठ सदुपयोग से काव्य में रमणीयता दिखलाई पड़ती है। काव्य की भाषा, भावना और परिपक्वता श्लाघनीय है जो पूज्य आचार्य श्री जी ने ज्ञान की उज्ज्वलता का परिणाम है।

पूज्य आचार्य श्री जी ने तीर्थोदय काव्य कृति में मोक्षमार्ग की प्राप्ति के लिए रत्नत्रयमयी साधना का उपाय प्रदर्शित कर जैन जगत के ऊपर जो उपकार किया है, वह अविस्मरणीय रहेगा। आपका रत्नत्रय परिपूर्ण बना रहे, यही मंगल भवना भाते हैं। पूज्य गुरु ससंघ के श्री चरणों में त्रिबार सविनय नमोस्तु।

गणेश कॉलोनी, नया बाजार लश्कर, ग्वालियर(म.प्र.)

संदर्भ ग्रथ-

1. तत्त्वार्थ वार्तिक 1/1/37 पृ. 29 2. तत्त्वार्थसूत्र 10/2 3.सिद्धिविनिश्चय पृ. 485
4. मोक्षः स्वात्मोप्लबधि आत्ममीमांसा वृत्ति आचार्य वसुनन्दि कृत 40
5. तीर्थोदय काव्य पद 218 पृ. 53, 655 पृष्ठ 152 6. तीर्थोदय काव्य पद 23 पृ. 10
7. तीर्थोदय काव्य पद 19 पृ. 9 8. रत्नकरण्डक श्रावकाचार श्लोक 42 9. द्रव्य संग्रह गाथा 42

तीर्थोदय काव्य के रचयिता
आचार्य प्रवर श्री आर्जवसागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व

-पं.दीपचंद जैन शास्त्री, भोपाल

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के बहुमुखी प्रतिभा के धनी, व्यक्तिव एवं उनकी रचित अनेक प्रसिद्ध कृतियों की समीक्षात्मक टिप्पणी पर आलेख प्रस्तुत है। गुरुदेव आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग उपयोगी अनेक बहुमूल्य कृतियों की रचना की है जिसमें जैन धर्म के अनुयोगों का सार समाहित है ।ये अनूठी कृतियां संपूर्ण जैन दर्शन का अत्यंत सरल शब्दों में अनेक ग्रंथों का सहजता से ज्ञान कराने वाली स्वाध्याय प्रेमी श्रावकों के लिए अत्यंत मूल्यवान एवं बहुउपयोगी हैं ।

-संपादक

समाज के धार्मिकता, नैतिकता, सदाचारत्व, विनयशीलता और अध्ययन-चिंतन की प्रेरणा के प्रदायक, साधना एवं भावना साधक, सर्वोदय सिद्धांत के प्रणेता एवं अहिंसा के प्रतिपालक श्रमण होते हैं। श्रमण की संगति के बिना श्रावक समाज का उद्धार होना कठिन है। कर्मयुग के आदि में सर्वप्रथम श्रमण दीक्षा का आदर्श एक वर्ष उपवास ग्रहण कर और खड्गासन में अडिग स्थिर होकर श्री बाहुबली स्वामी ने उपस्थित किया जिस प्रकार पिता-पुत्र से वंश परम्परा की प्रगति होती है, उसी प्रकार आचार्य-शिष्य परम्परा से श्रमण परम्परा संचालित होती है। श्रमण धर्म की आवश्यकता को व्यक्त करते हुए आचार्य कुन्द-कुन्द श्रमण धर्म का उपदेश प्रदान करते हैं-

एवं पणमिय सिद्धे जिणवरवसहे पुणो पुणो समणे।
पडि वज्जदु सामण्णं, जदि इच्छदि दुक्ख परिमोक्खं॥[1] (प्रवचनसार अ.3 गा.1)

अर्थात् ज्ञान-गुण के महत्व को समझकर भव्य मानव यदि कर्म जनित असंख्य दुःखों से पूर्णतः मुक्ति चाहते हैं, तो श्रमण धर्म को अंगीकार करें। यह उपदेश सिद्ध, अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और श्रमणों को भक्ति पूर्वक प्रणाम करके कहा गया है। इस कथन से श्रमण धर्म की अत्यंत आवश्यकता प्रतीत होती है। भारतीय संस्कृति में- ''जिन श्रमणों का हाथ ही पवित्र बर्तन है, भिक्षावृत्ति से प्राप्त जिनका भोजन है, दशों दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं, सम्पूर्ण पृथ्वी ही जिनकी शय्या है, एकान्त में निःसंग रहना ही जिनको आनंदप्रद है, दीनता को जिन्होंने छोड़ दिया है, कर्मों को जिन्होंने निर्मूल कर दिया है, जो आत्मा में ही संतुष्ट रहते हैं, वे श्रमण प्रशंसनीय हैं।[2] (वैराग्य शतक पृ.-46)

आधुनिक युग में परमपूज्य आचार्य श्री आर्जवसागर इसी श्रमण परम्परा के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। वह एक जीवन्त प्रतीक श्रुत व शील से सम्पन्न हैं। उनमें ज्ञान की गरिमा है किन्तु, उसका अहंकार नहीं है। आगम साहित्य के गंभीर ज्ञाता एवं तल स्पर्शी विद्वान होने के बाद जिज्ञासा वृत्ति सदैव प्रवाहमान रहती है। ज्ञान के आगर होते हुए भी वे ज्ञान के जिज्ञासु हैं। आप संचार के प्रपंचों से रहित, निस्पृह, निराकांक्षी, आत्म-दृष्टा तथा ध्यान योगी हैं। आपकी वाणी में ऋजुता व्यक्तित्व में समता एवं जीने में सादगी की त्रिवेणी है। आपकी सरलता,

सहजता एवं स्नेह सौहार्द से आह्लादित करने वाली मुखमुद्रा किसी भी दर्शक को अनायास अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

व्यक्तित्व व्यक्ति का सर्वस्व है, गुणी व्यक्तित्व की गणना में जिस पर पुंगव का नाम अंगुलियों पर अंकित होता है, उसी मानव भूषण के जन्म की सार्थकता है। शिवपथ के सौम्य पथिक, संयम राह के अविरल राही, नर जन्म को धन्य करने वाले ऐसे आचार्य श्री का धराधाम पर अवतरण मध्यप्रदेश के दमोह जिलान्तर्गत फुटेरा कलां ग्राम में जिला दमोह भाद्र शुक्ल अष्टमी, दिनांक 11-09-1967 को हुआ था। दिशाएँ अनेक हैं, पर वास्तविक और महनीय दिशा तो वही है प्राची, जिसके गर्भ में सूर्योदय होता है ''श्रीमति माया देवी, ऐसी ही प्राची दिशा थीं, जो फुटेराकलां निवासी'' श्री शिखरचंद जैन की धर्मपत्नि थीं।

पारिवारिक, सारस्वत तथा धार्मिक परिवेश में अनुवंशतः प्राप्त संस्कार परिवेश की अनुकूलता से विकसित होते हैं। जो उनके विकास में सहायक होते हैं आपके माता-पिता धार्मिक वृत्ति के इंसान थे। वे एक सफल कृषक के साथ-साथ साहूकार भी थे। माता-पिता दोनों ही धर्मपरायण, अल्पपरिग्रही, परार्थ सेवाभावी तथा परमार्थी स्वभाव के व्यक्ति थे।

'होनहार विरवान के होत चीकने पात' की सूक्ति आप पर पूर्ण रूप से लागू होती है। आपकी सम्पूर्ण बाल्यावस्था मन भावन व विस्मित करने वाली घटनाओं से भरी है। अपनी मनोहारी व आकर्षक क्रियाओं के कारण पूरे ग्राम के चहेते रहे। आपकी गतिविधियाँ बचपन से ही विविधायामी थीं। आपकी बचपन से मंदिर जाना, धार्मिक मुनियों के दर्शन करना आदि धार्मिक कार्यों में रुचि थी।

कला स्नातक प्रथम वर्ष के अध्ययन के बाद ही आपका चिन्तन वैराग्य की ओर बढ़ गया। भौतिक सुख नश्वर है की पंक्ति 15 वर्षीय बालक के हृदय में वैराग्य का बीज बोती गयी। चारों गतियों के दुःख से संसार में ही भ्रमण नहीं करना है, अब तो आत्म कल्याण का कार्य करना है।

युवावस्था का आकर्षक कब पीछे छूट गया, यह कोई जान नहीं पाया। पारिवारिक व मुनि महाराज का सत्संग, उनके वैराग्य भाव को तीव्र कर रहा था। इसी चिंतन में कदम बढ़ गये पनागर क्षेत्र की ओर जहाँ परमपूज्य आचार्य विद्यासागर से दिनांक 19-12-1984 को ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया एवं आजीवन नमक का त्याग कर दिया। एतदनन्तर इतने से आत्म संतुष्ट नहीं हुए और सन् 1985 में सिद्धक्षेत्र आहार जी में सप्तम प्रतिमा आचार्य श्री विद्यासागर महाराज से ग्रहण की थी। ब्रह्मचारी पारसचंद अभी 20 वर्ष के ही नहीं हुए थे पर उनकी अगाध गुरुनिष्ठा, शास्त्राभ्यास और दृढ़व्रत ने गुरुदेव को अंदर तक प्रभावित किया। सिद्धक्षेत्र अहारजी जिला टीकमगढ़ म.प्र. में आचार्य विद्यासागर महाराज ने पारसचंद को दीक्षा संस्कारों के साथ दिनांक 08-11-1985 को क्षुल्लक दीक्षा दे दी और वे पारस से क्षुल्लक आर्जवसागर बन गये एवं दिनांक 10-07-1987 अतिशय क्षेत्र थूबोन जी में ऐलक दीक्षा आचार्य विद्यासागर जी महाराज से ग्रहण की।

कदम हर कदम आगे वृद्धि के लिए प्रेरित थे। आखिर दिनांक 31-03-1988 को महावीर जयन्ती के पावन दिवस पर सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी जिला दतिया (म.प्र.) में आचार्य श्री विद्यासागर जी ने मुनि दीक्षा प्रदान की। भरे यौवन में इस युवा तपस्वी ने जिस मार्ग को चुना वह साधना मार्ग आग का दरिया, तलवार की तीक्ष्ण धार

पर नग्न पाद चलने के समान था। यह बिंदु के सिंधु में विलय की यशस्वी प्रक्रिया थी। आचार्य विद्यासागर जी के पारसमय व्यक्तित्व का स्पर्श पाकर मुनि आर्जवसागर जी की जीवन साधना अग्नि में तप-तप कर कुन्दनमय हो गयी। इसी पथ की अग्रिम साधना के तारतम्य में आचार्य श्री की पदवी माघ शुक्ला षष्ठी दिनांक 25-01-2015 को समाधिस्थ आचार्य श्री सीमंधरसागर जी द्वारा इंदौर म.प्र. में प्रदान की गई।

आचार्य श्री का कृतित्व-

आचार्य श्री बड़े दूरदर्शी संत हैं। वे वर्तमान में स्थिर रहकर सुदूर भविष्य में झांकने का अदभुत कौशल जानते हैं और यही विधि कौशल वह अपनी युग पीढ़ी को देना चाहते हैं। आचार्य श्री का पूरा अर्जन आज यही युग पीढ़ी को देना चाहते हैं। आचार्यश्री का पूरा अर्जन आज यही युग चेतना देता हुआ, उन्हें गतिमान बनाये है उनकी गति ही प्राण चेतना है और यही तपस्या की सिद्धि गन्तव्य है।

पाश्चात्य जीवन के संसर्ग एवं भौतिक साधनों की अतिशयता ने भारतीय मानस को बदला ही नहीं वरन विकृत भी बना दिया है। भारतीय संस्कृति की दुहाई देता हुआ वह असल में पाश्चात्य जीवन की बाह्य विकृतियों को अंगीकार कर चुका है। इसमें सांस्कृतिक शैक्षिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में विसंगतियाँ पैदा हो गई हैं। आचार्य श्री ने स्थान-स्थान पर इस विसंगतियों को दूर करने का प्रयास किया है वह कर रहे हैं।

1. विभिन्न संस्थाएँ-

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति इस संस्था की नींव सन् 2004 में आचार्य श्री की प्रेरणा व आशीर्वाद से हुई थी। इस समिति का मुख्य उद्देश्य जीव दया व अहिंसा के प्रचार के साथ-साथ पशु रक्षा हेतु गौशाला के संचालन में सहयोग तथा विभिन्न नगरों में पाठशालाओं के संचालन में सहयोग करना, आचार्य श्री के साहित्य का प्रकाशन, प्रचार-प्रसार करना आदि है, इसके माध्यम से आचार्य श्री की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए भाव विज्ञान पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

2. भाव-विज्ञान पत्रिका-

यह पत्रिका त्रैमासिक प्रकाशित हो रही है। पत्रिका का प्रकाशन 2007 से आचार्य श्री के आशीर्वाद व प्रेरणा में संस्थापित भगवान महावीर आचरण संस्था समिति द्वारा निरन्तर आबाध रूप से किया जा रहा है, जिसके देश विदेश में आज सदस्य हैं यह पत्रिका निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। आचार्य श्री के वैज्ञानिक चिंतन को इसके माध्यम से प्रकाशित कर ज्ञान लोक में एक और प्रकाश हो रहा है।

3. तीर्थस्थल-

निरन्तर राग से वैराग्य की ओर बढ़ती अपनी साधना को स्पर्श पाकर अनेक प्राचीन तीर्थस्थल भी जीवंत हो उठे और आगामी पीढ़ी के लिए आपके निर्देशन में आध्यात्मिक साधना के केन्द्र बनते जा रहे हैं।

4. चेतन कृतियों के निर्माता-

अभी तक आपसे लगभग 20 मुनि आर्यिकाएँ दीक्षा पाकर मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हुए ताकि अनेक बाल ब्रह्मचारी युवक युवतियाँ शिक्षा संस्कारों को पाकर भौतिक चकाचौंध से दूर आध्यात्मिक जीवन जी रहे हैं। आपके शिष्यों द्वारा जैन संस्कृति की सराहना उत्तरोत्तर सराहना युगों-युगों तक की जाएगी और ऐसे आचार्य श्री

की दया और देन को सदैव कालजयी माना जाएगा।

5. आचार्य श्री का रचना संसार-

आचार्य श्री के चिंतन लेखन और प्रवचन सरस्वती अवतरित दिखाई देती है, उनका चिंतन जब शब्दों का आकार लेता है। वह एक अनूठी काव्य श्रृंखला बन जाता है। आपकी साहित्यिक चेतना को हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं-

1. काव्य- तीर्थोदय काव्य, मोक्ष प्रदायक काव्य।

2. शतक- सम्यक् ध्यान शतक, धर्मभावना शतक, आत्मोद्धार शतक, अन्तादिक शतक, आशीर्वाद शतक, गुरु गुण महिमा शतक।

3. अनुवादित ग्रंथ- पद्यानुवाद मंजरी, बारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश, भक्तामर, तत्त्वसार, द्रव्यसंग्रह, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका।

4. कविताएँ- आर्जव कविताएँ।

5. प्रवचन साहित्य- पर्यूषण-पीयूष, जैनागम संस्कार, परमार्थ-साधना, नेक-जीवन, बचपन का संस्कार, जैनधर्म में कर्मव्यवस्था, आर्जव वाणी, आध्यात्मिक प्रवचन, ह्रँ योग ध्यान।

वस्तुतः ये रचनायें कवि के बुद्धि वैभव और भाव कौशल को संपूर्ण परिचायिकाएँ हैं। इन रचनाओं के कथात्मक एवं कलात्मकता का संक्षिप्त विवेचन निम्न प्रकार है-

1. तीर्थोदय काव्य- अपकी यह रचना उत्कृष्ट काव्य कृति का नमूना है। यह काव्य ही नहीं महाकाव्य में गर्भित होता है। इसमें 6 सोपान एवं 700 पद्य हैं। तीर्थोदय काव्य की विषय वस्तु जैन दर्शन के सिद्धांतों पर आधारित है इसमें सोलह कारण भावनाओं का विशद वर्णन है तथा तीर्थंकर बनने की प्रक्रिया का शास्त्रानुसार विशेष उल्लेख किया गया है। इसमें जैन दर्शन के चारों अनुयोगों का सार है। यह काव्य साधु एवं श्रावक दोनों के लिए सामान रूप से उपयोगी है। यह काव्य भवसागर से मुक्त कराने वाला है। तीर्थंकर निर्माता वाला काव्य है तीर्थोदय काव्य में काव्य के दोनों पक्ष भाव पक्ष व कलापक्ष का बेजोड़ मिलन है। वैराग्यरस के रसिक, प्रसाद एवं माधुर्य गुणों से परिपूर्ण, छंद अलंकारों का अनुपम प्रयोग एवं दर्शन की झलक इन सभी गुणों से परिपूर्ण यह काव्य है। इस काव्य में आपके द्वारा दर्शन जैसे गूढ़ और नीरस विषय को सरस एवं सरल रूप में रुपान्तरित किया है।

2. सम्यक् ध्यान शतक- इस शतक का सृजन आपने सन् 2006 के ग्वालियर नगर (म.प्र.) के चार्तुमास के दौरान किया गया था आचार्य श्री के इस स्वरचित शतक में महान ग्रंथों का ज्ञान समाहित किया है, जिसमें मंगलाचरण से लेकर संसार का लक्षण मोक्ष का स्वरूप आदि का अत्यंत सुन्दर सरल वर्णन करते हुए ध्यान सागर को कौशल के साथ परिपूर्ण कर दिया। जिसका एक-एक छंद, मंत्र की महान शक्ति रखता है। आपने ध्यान की महत्ता बताते हुए 15 वें दोहे में गागर में सागर भरते हुए कहा है कि-

मन पूरे जग में फिरे, एक - जगह ना ध्यान।
केंद्रित निज में ध्यान तब, प्रगटे केवलज्ञान।।[3]

निज में केंद्रित होकर जब प्राणी निज को ध्याता है, तब केवल ज्ञान प्रगट होता है। अतः ध्यान की

केवलज्ञान और मोक्ष का द्वार है।

3. धर्म भावना शतक-

इस शतक का सृजन आपने सन् 1991 कोपरगांव (महा.) के चातुर्मास के दशलक्षण पर्व के दौरान किया था। पर्यूषण पर्व के दस गुणों की चर्चा की जाती है। इन गुणों के विषय में जानने समझने की उत्कृष्ट लालसा सभी श्रावक श्राविकाओं में पायी जाती है। आचार्य श्री की यह कृति लीक से हटकर है। यह एक पद्यबद्ध रचना है। इस कृति में आचार्य श्री ने यथा स्थान अनेक पौराणिक प्रसंग व उदाहरण देकर इसे सरस हृदयग्राही एवं स्वाध्याय प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी बनाया है।

4.वारसाणुवेक्खा एवं इष्टोपदेश आदिरूप पद्यानुवाद मंजरी-

आचार्य श्री कुन्द-कुन्द ने वारसाणुवेक्खा ग्रंथ की रचना प्राकृत भाषा एवं पद्यशैली में की है एवं इष्टोपदेश आचार्य श्रीपूज्यपाद की लघुकाय किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। यह संस्कृत भाषा एवं पद्यशैली में निबद्ध है, बहुश्रुतज्ञ एवं बहुभाषा विद आप श्री ने इन दोनों का ज्ञानोदय छन्द में हिन्दी अनुवाद किया है। इन दोनों ग्रंथों का विषय अध्यात्म है, गूढ़ है, कठिन व शुष्क है, तदपि आचार्य श्री ने अपनी सरल, सरस, मधुर एवं सुबोध भाषा में पाठकों को सुवाच्य एवं सुपाच्य बना दिया।

5. आर्जव कविताएँ-

आपके द्वारा मोक्षमार्ग पर चलने के प्रयोजनार्थ विभिन्न तीर्थ क्षेत्रों, स्थानों की आवश्यकताओं अनुभवों समाधि-मरण के समय संबोधन, पंचकल्याणक, महापर्वों एवं विशेष अवसरों पर समाज को नयी दिशा देने के संदर्भ में हिन्दी, कन्नड़ भाषा, मराठी भाषा एवं तमिल भाषा में विभिन्न कविताओं की रचना की है, जिसे संकलित किया गया है। आपकी कविताओं की भाषा परिमार्जित, भावानुकूल, अभिव्यक्तिशम्, सरल, सरस एवं जनोपयोगी है। कविताओं में सभी विषयों पर आपका अधिकार है, आपकी कविताओं की विषयवस्तु संसार के भव्यजीवों को मोक्षमार्ग प्रशस्त कराने में सहायक है।

6. पर्यूषण पीयूष-

इस कृति का सृजन 2004 में भोपाल चातुर्मास के दौरान आचार्य श्री के कुछ प्रवचनों को संग्रहित कर किया गया है। प्रस्तुत कृति की विषय-वस्तु मोक्ष पुरुषार्थ की साधना है। इसमें 13 विषयों का समावेश किया गया है। इसमें संकलित प्रत्येक लेख की भाषा सरल व सहज बोधगम्य हिन्दी है। यह परमार्थ-साधना पुस्तक ''गागर में सागर'' वाली युक्ति चरितार्थ करती है।

8. नेक-जीवन-

इस कृति का सृजन सन् 2004 में भोपाल में चातुर्मास के दौरान हुआ। यह कृति धार्मिक पाठशालाओं के निमित्त सृजित की गई है, जिसमें मंदिर की विधि शिष्टाचार तथा नियमावली एवं मर्यादा संबंधी विषय वस्तु का उल्लेख है। वस्तुतः यह पुस्तक बालकों के साथ-साथ श्रावक को सही अर्थों में श्रावक बनाने की भी विधि बतलाती है, अपितु आचार्य श्री ने जैन समाज को ही नहीं मानव मात्र को नियमित एवं संयमित जीवन जीने का कला का संदेश इस कृति में किया है।

इसी तरह आचार्य श्री ने जैनागम संस्कार, बचपन का संस्कार, जैन धर्म में कर्म व्यवस्था एवं आर्जव वाणी आदि रचनाओं का भी सृजन किया है। जिसमें अत्यंत सरस, सरल एवं सुबोध भाषा में कविताएँ जनोपयोगी बनाई गई हैं।

आचार्य श्री आर्जवसागर अपने गाम्भीर्य किन्तु शांतमुद्रा में सुधारस जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। ''विद्यासागर की पूर्णता आर्जवसागर में ही होती है'' संभवतः इसलिए आचार्य श्री विद्यासागर ने योग्य शिष्य को पाकर आर्जव नाम से अलंकृत कर उसे पारस से अपूर्व पारसमणि बना दिया है, जिसके स्पर्श मात्र से कोई भी प्राणी शुद्धावस्था (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है।

आपको पाकर लगता है न जाने कितने जन्मों का पुण्य फलित हो रहा है। आचार्य श्री चलते फिरते तीर्थ हैं। आचार्य श्री आधुनिक राष्ट्रीय संत हैं एवं मर्मी कवि, सफल अनुवादक, शास्त्रज्ञ, विद्वान एवं चिंतक कवित हैं। अंत में किसी कवि की यह पंक्तियाँ आचार्य श्री की विराटता को व्यक्ति करती है-

''कुन्द-कुन्द के समयसार का सार हमें जो बता रहे।
समन्तभद्र का डंका घर-घर द्वार-द्वार है बजा रहे॥
भोले-भोले अनाथ जन के जो हैं पावन धाम।
ऐसे गुरुवर आर्जवसागर को मेरा शत-शत प्रणाम''॥

साहित्याचार्य, एम.ए., (हिंदी, अर्थ शास्त्र, एम.कॉम.)
एच.बी-64, अभिरुचि परिसर, ओल्ड सुभाष नगर, भोपाल(म.प्र.)

संदर्भ ग्रन्थ-

1. आचार्य कुंदकुंद; प्रवचनसार; अध्याय-3, गाथा-2
2. वैराग्य शतक; पृष्ठ-46
3. आचार्य आर्जवसागर; सम्यक् ध्यान शतक; पद्य-15

रत्नत्रय से पवित्र तन व, मन शोभित मुनिचर्या से।
विद्या गुरु के शिष्य अनोखे, षट् आवश्यक क्रिया से।
जग जन के उद्धारक मुनिवर, अनुपम अद्भुत मनहर हैं।
जिनवाणी रसपान कराते, गुरुवर 'आर्जवसागर' हैं॥

जैनागम संस्कार में वर्तमान पीढ़ी हेतु दिशाबोधक संस्कारों का विवेचन

-ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर 8989505108

वर्तमान पीढ़ी तर्क पथ अनुगामी है वर्तमान पीढ़ी को अंधेरे में भटकाया नहीं जा सकता है क्योंकि वर्तमान पीढ़ी के सामने काल्पनिक विषयों का प्रस्तुतिकरण सार्थकता से शून्य होता है एवं किस्सा, कहानियों के माध्यम से इस पीढ़ी को संतुष्ट नहीं किया जा सकता है। आज की पीढ़ी प्रयोगधर्मी है प्रेम एवं सद् भावना के आधार पर ही हम इस पीढ़ी को दिशाबोध दे सकते हैं तथा एक ठोस कार्यक्रम के बिना संस्कार निर्माण की बात सोचना एक बेईमानी के सिवा कुछ नहीं होगा। सच पूछा जाये तो वर्तमान पीढ़ी में संस्कार डालना सतत् प्रयास के बिना संभव नहीं है। आगम की बातें भी तब तक इस पीढ़ी को प्रभावित नहीं कर सकती है, जब तक वस्तु निष्ठ विवेचन नहीं चलता रहता है। अतः वर्तमान पीढ़ी को संस्कारित करना एक कष्ट साध्यकारी है परंतु असंभव नहीं है।

आचार्य श्री आर्जवसागर महाराज जी द्वारा लिखित जैनागम संस्कार में 21 विषयों को दर्शाया गया है णमोकार मंत्र, तीर्थंकर, जैन श्रावक कर्तव्य, देवदर्शन विधि एवं उसका माहात्म्य, व्यसन मुक्ति एवं शाकाहार, पूजन माहात्म्य, जैन धर्म माहात्म्य, रत्नत्रय का स्वरूप, सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, सप्ततत्व षट्दर्शन, त्रिलोक वर्णन, नवधाभक्ति, समाधिमरण माहात्म्य, व्रत पर्व माहात्म्य, अष्ट द्रव्य विवेचन, गुणस्थान वर्णन, अध्यात्म उपयोग एवं स्वरूपाचरण, अनेकांत दृष्टि, नैतिकता और शिष्टाचार इन विषयों का इसमें वर्णन किया गया है। सभी विषय वर्तमान पीढ़ी संस्कारों के लिये ही हैं इसलिये इसका नाम जैनागम संस्कार रखा गया है।

संस्कारों के निर्माण वैसे तो गर्भ से तीन वर्ष तक की उम्र में विशेष रूप से होता है कहा है-

जाके जैसे नदिया नाले, वाके वैसे भरका।
जाके जैसे बाप मताई, वाके वैसे लड़का॥

श्रावक के षट् आवश्यक होते हैं जिनमें देव पूजा पहले नंबर पर रखा गया है आचार्य श्री ने पूजा का महत्व बताते हुए पूज्य के उत्तम गुणों के ज्ञान को पूजा कहा है। वीतराग, सच्चे देव, सच्चे शास्त्र, सच्चे गुरु को पूज्य कहा है तथा सच्चे देव, सच्चे शास्त्र, सच्चे गुरु पर अटूट श्रद्धा रखने वाला पूजक होता है। पूजायें कई प्रकार की बताई हैं नित्य पूजा, नैमित्तिक पूजा, चतुर्मुख (सर्वतोभद्र) पूजा, कल्पद्रुम पूजा, अष्टाह्निक पूजा, इन्द्रध्वज पूजा, सोलहकारण पूजा, दशलक्षण पूजा और कल्याणक पूजा जिसमें आचार्य आर्जवसागर जी महाराज सोलहकारण में 32 दिनों तक सोलहकारण अनुष्ठान कराते हैं जो युवाओं में संस्कार निर्माण का कार्य करते हैं। उसमें स्वाध्याय करने की प्रेरणा देकर स्वाध्याय के अभिमुख करते हैं इससे श्रावकों में अष्ट मूलगुण पालन करने की शिक्षा मिलती है तथा सप्त व्यसन से मुक्त होकर एक श्रावक का जीवन कैसा होना चाहिए? उसको जानते हैं।

शिष्ट अर्थात् अच्छे श्रेष्ठ लोगों का न्याय-नीति से चलना ही उनका नैतिकता और शिष्टाचार कहलाता है। जिसके लिए सर्वप्रथम हमारे पूज्य जिनालय, जिनेन्द्र देव, आगम (शास्त्र) और समीचीन गुरुओं के प्रति या उनके समक्ष विनीत बन, कैसा जाना? कैसे क्या-क्या बोलना? और क्या-क्या भूलना अर्थात् धर्म क्षेत्र में किससे

दूर हटना? जिससे उनकी अर्थात् धर्म की आसादना न हो। इसी तरह धर्म सभा में हमारी चेष्टा कैसे हो? वहाँ के वातावरण को हम कैसे व्यवस्थित सुन्दर बनाए रखें? तथा सामान्यरूप से लोक में या सामाजिक तौर पर हमारा व्यवहार कैसा हो? और जिससे फैली हुई समाज की कुरीतियाँ का उन्मूलन हो सके एवं जैनियों का ज्ञानियों के कर्त्तव्य या बोध में शोध चल सके। इस बात को ध्यान में रखते हुए अपने भाग्योदय से ही मानो अपने जीवन के परिमार्जन हेतु गुरुकुलों की पद्धति से नैतिकता और शिष्टाचार के इस अंतिम इक्कीसवें अध्याय में चिन्तन और मंथन हुआ है।

गुरु गुणानुवाद

–निर्मला पी.सी. जैन

गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान
चाह नहीं थी जीवन में, तृणवत धन को ठुकराया,
तरुणावस्था में दीक्षा लीनी, ज्ञान अलौकिक पाया,
नश्वर जीवन नश्वर काया, लिया सत्य पहचान। गुरु...

बड़े-2 मुनि जिस जीवन को, सफल नहीं कर पाते,
उच्च साधना के बल पर ही, श्रेष्ठ पद को पाकर,
स्वयं और औरों का भी, कर रहे आप कल्याण,
गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान।

मीठी वाणी ने तो हम पर, मानो जादू कर डाला,
उपदेश भरे व्याख्यानों से, गूँथी ज्ञान की माला,
हम सब अज्ञानी के मन में, डाली धर्म की जान,
गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान।

मीठी चुटकी मन हर लेती, किस्से बहुत ही भाते,
गीत आपके बड़े रसीले, सुनते नहीं अघाते,
हम सबके मन को खुब ही लाते, रहता सभी का ध्यान,
गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान।

चन्द्रप्रभु के उदय नगर को, पावन आप बनाया,
धन्य-2 वे कोटा भी, जिनने आकर लाभ उठाया,
कैसे बिताये जीवन अपना, मिला आपसे ज्ञान ।
गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान।

सरल किन्तु ओजस्वी वाणी, चोट हृदय करती है,
पाषाण हृदय भी क्यों ना हो, करुण भावना भरती है,
कितनों का ही जीवन सुधरा, सुधरी कई की बात,
गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान।

धर्म कार्य में लग जावे, क्षुद्र भावना को छोड़े,
दीन दुखी को गले लगावे, गुरुवर ....,
वरद् हस्त होगा जब गुरुवर का, हमारा होगा तभी कल्याण,
गुरुवर कैसे करूँ बखान, आप हैं संत महान।

ज्ञान

–आचार्य श्री आर्जवसागर जी

दस लक्षण का ज्ञान बड़ा है। क्रिया सहित सम्मान बड़ा है॥
दस धर्मों से प्रीति बढ़ायें। मोह छोड़ अनुभूति बढ़ायें॥

षोडस-कारण ज्ञान बढ़ाना। तीर्थंकर-सम पुण्य है पाना॥
सर्व जगत् कल्याण भावना। जैन धर्म की बढ़े प्रभावना॥

रत्नत्रय का भाव जहाँ है।
मोक्षमार्ग प्रभाव वहाँ है॥
पर्व मनायें रत्नत्रय का।
ज्ञान व सुख मिलता जगत्रय का॥

पूर्ण अहिंसा भाव जहाँ हो।
सब धर्मों का सार वहाँ हो॥
कर्म मुक्ति का लक्ष्य जहाँ हो।
ज्ञान, चरित में दक्ष वहाँ हो॥

उपकारी गुरुवर और तीर्थोदय काव्य

-कु. दीक्षा जैन, एम.कॉम, मण्डीदीप

एक अच्छे लेखक, सुष्ठु वक्ता, और सरस हृदय सुकवि के रूप में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के द्वारा सर्वान्तः सुखाय की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर पद्यमय काव्य संग्रह तीर्थोदय काव्य की रचना की है जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों का सार समाहित है। प्रस्तुत लेख में ''क्षायिक सम्यग्दर्शन की महिमा'' विषय पर तीर्थोदय काव्य में उल्लेखित पद्यों पर भाव भीने विचार प्रकट किए है।

-संपादक

आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज को मेरा मन, वचन, काय पूर्वक कोटिशः नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु। आचार्य श्री आपके अनेकों उपकार हैं हम आपके उपकारों को कभी नहीं भूल पाएँगे। आपके द्वारा रचित तीर्थोदय काव्य जो कि सरल हिन्दी भाषा के ज्ञानोदय छन्द में लिखा गया है। इस तीर्थोदय काव्य को सोलहकारण पर्व में हमने स्वयं आपके सान्निध्य में पढ़ा था। उस समय प्रायः हर व्यक्ति को इस काव्य का मंगलाचरण याद हो गया था और आपने इतने अच्छे से पढ़ाया कि मुझे अभी तक इस काव्य का मंगलाचरण याद है जो कि इस प्रकार है-

पूर्ण लोक के जीव जिसे हैं, श्रद्धा-पूर्वक नमें सदा।
परमेष्ठी जो वीतरागमय, परम पूज्य को भजूँ सदा॥
सोलहकरण तीर्थ-भावना, भाऊँ कर्म नशाने को।
यह तीर्थोदय काव्य लिखूँ मैं, भव-सुख तज, शिव पाने को॥ 1॥[1]

तीर्थोदय काव्य की विशेषताएँ

षोडशकारण भावनाओं पर आधारित ज्ञानोदय छन्द में लिखा गया यह काव्य है। जिसमें 34 मुरज बंध 704 पद्यों = 613 ज्ञानोदय + 91 दोहे सम्यक्त्व का वर्णन- दो शतकों के पद्यों में अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

नोट- इस काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके रचयिता आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज हैं।

आगम के अनुरूप आर्ष परम्परा से लिखा गया तीर्थोदय काव्य है और इसके प्रत्येक सोपान के अन्त में दो-दो दोहे के साथ मुरज बंध लिखे हैं। आपके द्वारा दिया गया विषय (क्षायिक सम्यग्दर्शन की महिमा) ज्ञानार्जन करने में और धर्मध्यान करने में बहुत श्रेष्ठ निमित्त बना।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी ने जिस दृढ़ता से सम्यग्दर्शन का स्वरूप बताया है उसी विषय में मेरी आप से विनयपूर्वक यही प्रार्थना है कि अगले भव में आपके सान्निध्य में ही क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो। आचार्य श्री आपका बहुत ही सरल स्वभाव और वात्सल्य हमें ऐसा अवश्य दिलवायेगा।

सात प्रकृतियाँ

तीन दर्शन मोहनीय	चार चारित्र मोहनीय
मिथ्यात्व	अनन्तानुबन्धी क्रोध
सम्यक् मिथ्यात्व	अनन्तानुबन्धी मान
सम्यक्त्व	अनन्तानुबन्धी माया
	अनन्तानुबन्धी लोभ

क्षय

क्षायिक सम्यग्दर्शन

देव-शास्त्र-गुरु पर सच्चा श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है और यह सम्यग्दर्शन चारों गति में हो सकता है जैसे कि नरक गति में जातिस्मरण, धर्मश्रवण तथा वेदनानुभव के निमित्त से और तिर्यञ्च गति में जाति स्मरण और धर्म श्रवण से इसलिए सम्यग्दृष्टि जीव चारों गतियों में पाए जाते हैं। सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिए हमें सबसे पहले गृहीत मिथ्यात्व का त्याग करना चाहिए। सम्यग्दर्शन के दश भेद हैं और इसी के साथ तीन भेद और हैं- उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक। योग्य मनुष्यों को पञ्चमकाल में जन्म से आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के बाद सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है।

अभी पञ्चम काल में उपशम और क्षयोपशम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है, क्षायिक सम्यग्दर्शन की नहीं। सम्यग्दर्शन की यही महिमा है कि इसके अभाव में हम मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते तथा तीर्थङ्कर भगवान के समवशरण का दर्शन भी नहीं कर सकते। इसकी महिमा बताते हुए आचार्य श्री कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि जीव अगले भव में नरक, पशुगति, नपुंसक, नारी, दुष्कुल, विकलांग, अल्पआयु और दरिद्र कुल में जन्म नहीं लेता और वह जीव स्वर्ग के सुख को प्राप्त करता है। अब आगे हम क्षायिक सम्यग्दर्शन और उसकी महिमा को जानेंगे।

सम्यग्दर्शन

25 दोष	**अंग नाम**	**प्रसिद्ध**	**निमित्त**	**दश भेद**	**भेद**
3 मूढ़ता	निःशंकित	अंञ्जन चोर	जातिस्मरण	आज्ञा	उपशम
8 मद	निःकांक्षित	अनन्तमति	धर्मश्रवण	मार्ग	क्षयोपशम
6 अनायतन	निर्विचिकित्सा	उड्डयान	वेदनानुभव	उपदेश	क्षयोपशम
8 शंकादि दोष	अमूढ़दृष्टि	रेवती रानी	जिन बिम्ब दर्शन	सूत्र	क्षायिक
	उपगूहन	देवर्द्धिदर्शन		संक्षेप	
	स्थितिकरण	जिनेन्द्र भक्त श्रेष्ठी	जिन महिमा	विस्तार	
	वात्सल्य	गुरु वारिषेण		अर्थ	
	प्रभावना	विष्णुकुमार मुनि		अवगाढ़	
		उर्विला रानी		परमावगाढ़	
				बीज	

सम्यग्दर्शन= 3 मूढ़ता से रहित + 8 अंगों सहित + 8 मदों से रहित + देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धान

सम्यग्दर्शन की महिमा

सम्यग्दर्शन की महिमा को जानने से पहले हमें सम्यग्दर्शन के बारे में पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन इसी के अन्तर्गत आता है। इसके लिए हमें समयग्दर्शन का स्वरूप, महिमा और उसके दोष व अंग का ज्ञान होना आवश्यक है। तीर्थोदय काव्य के द्वितीय सोपान में इस सबका बहुत सुन्दर वर्णन है। जिसे हम संक्षिप्त में पढेंगे-

वीतरागमय देव-शास्त्र-गुरु-पर श्रद्धा जब भवि धारे।
तीन मूढ़ता, षट् अनायतन, तज अपूर्व गुण-छवि धारे॥
अष्ट अंग सह वसु मद तजकर, प्रशमादिक गुण को पाये।
सम्यग्दर्शी बनता वह भवि, शीघ्र वही शिव को पाये॥19॥[2]

भावार्थ- यह आचार्य श्री सम्यग्दर्शन का स्वरूप बताते हुए कहते हैं कि वीतरागमय देव-शास्त्र-गुरु पर तीन मूढ़ता (लोक मूढ़ता, देव मूढ़ता और गुरु मूढ़ता), षट् अनायतन (कुगुरु, कुदेव, कुधर्म तथा इनके सेवक), आठ मद (ज्ञान, रूप, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप और पूजा) रहित तथा आठ अंग और चार गुण (प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य) सहित जो श्रद्धान होता है उसे समयग्दर्शन कहते हैं। सम्यग्दर्शन मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी है। सम्यग्दृष्टि जीव नरक तथा तिर्यञ्च गति में नहीं जाता तथा वह जीव स्वर्ग के सुख भोगकर नर भव से मोक्ष जाता है।

क्षायिक-सम्यग्दर्शन और उसकी महिमा

क्षायिक-सम्यग्दर्शन की सबसे सरल परिभाषा यही है- वह सम्यग्दर्शन जो एक बार होने के बाद कभी नहीं छूटता उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन कहते हैं आचार्य श्री ने तीर्थोदय काव्य में इसका वर्णन इस प्रकार किया है-

सप्त इन्हीं प्रकृतियों का जो, क्षय कर लेता है प्राणी।
होय उसे क्षायिक-दर्शन वह, शीघ्र मुक्ति पाये प्राणी॥ 160॥[3]

भावार्थ- आचार्य श्री इस काव्य में क्षायिक सम्यग्दर्शन की परिभाषा बताते हुए कहते हैं कि सात प्रकृतियों अर्थात् दर्शन मोहनीय की 3 (मिथ्यात्व, सम्यङ्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति) चारित्र मोहनीय की 4 (अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ) इन प्रकृतियों का जो प्राणी क्षय कर लेता है उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जाती है और क्षायिक सम्यग्दृष्टि शीघ्र ही भव से पार हो जाता है और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

सरल भाषा में कहें तो क्षायिक सम्यग्दर्शन मोक्ष महल का पक्का रिजर्वेशन है। सम्यग्दर्शन मोक्ष का टिकिट है, जिस प्रकार टिकिट के बिना यात्रा नहीं कर सकते उसी प्रकार सम्यग्दर्शन के बिना मोक्ष नहीं जा सकते। आगे आचार्य श्री क्षायिक सम्यग्दर्शन की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि क्षायिक सम्यग्दर्शन सिर्फ केवली और श्रुत केवली के पाद मूल में ही प्रकट होता है। कर्मभूमि का मनुष्य ही क्षायिक सम्यग्दर्शन को प्राप्त होता है। तीर्थोदय काव्य में इसका वर्णन इस प्रकार है-

क्षायिक-समकित पानेवाला, कर्मभूमि का मानुष हो।
दर्श-केवली श्रुत सुकेवली, पाता दर्शन कालुष धो॥
दर्श-मोह की क्षपणा का वह, यहीं प्रतिष्ठापन करता।
मरण होय तो चारों गतियों-में निष्ठापन भी करता॥ 164॥[4]

भावार्थ- क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाला कर्मभूमि का मनुष्य होना चाहिए तथा यह सिर्फ केवली और श्रुत केवली के पाद मूल में होता है इसलिए पञ्चम काल में अभी क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता। आगे आचार्य श्री कहते हैं कि क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव चारों गति में पाए जाते हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के पहले जीव ने जिस आयु का बंध किया है उसे पहले उसी गति में जाना होगा फिर वहाँ से आकर मनुष्य गति को प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करेगा।

क्षायिक सम्यग्दर्शन की महिमा

सम्यग्दर्शन की ही इतनी महिमा है तो यह विचारणीय होगा कि क्षायिक सम्यग्दर्शन की कितनी महिमा होगी और इसकी महिमा बताते हुये कहते हैं-

एक बार भी पाता क्षायिक-दर्शन को, जब जो प्राणी।
ना छूटे यह दर्शन भवि का, शीघ्र पाय वह शिव-रानी॥
अगर उसी भव में भवि मुनि बन, क्षपक-श्रेणी सु-चढ़ता है।
उस ही भव से मोक्ष पाये वह, उत्तम सुख को गहता है॥ 165॥[5]

अथवा तीजे, चौथे भव में अवश्य पाये शिवगति को।
जिसने समकित पहले बाँधी, आयुष, पाता चउ गति को॥
दर्शन-सह नर बाँधे आयुष, इक ही पाता सुरगति को।
समकितधारी देव नारकी, बाँधें आयुष नरगति को॥ 166॥[6]

भावार्थ- इन दोनों पद्य में आचार्य श्री क्षायिक सम्यग्दर्शन की महिमा बताते हुए कहते हैं कि क्षायिक सम्यग्दर्शन कभी नहीं छूट सकता है। क्षायिक सम्यग्दृष्ट जीव या तो उसी भव से या फिर तीसरे या चौथे भव से अवश्य ही मोक्ष जाता है।

तीसरे भव और चौथे भव से मोक्ष जाने का कारण है- बद्धायुष्कपना (वह आयु जो जीव ने सम्यग्दर्शन प्राप्त होने के पहले बाँध ली थी)

क्षायिक सम्यग्दृष्टि का मोक्ष

(अधिक से अधिक चार भव)

	वर्तमान भव	दूसरा भव	तीसरा भव	चौथा भव
1.	मोक्ष	-	-	-
2.	मनुष्य	नरक(प्रथम)	मोक्ष	-

	(कर्मभूमि)	देवगति	(मनुष्यगति)	
3.	मनुष्य	भोगभूमि	देवगति	मोक्ष
	(कर्म भूमि)	(मनुष्य/तिर्यञ्च)		(मनुष्य गति)

यह क्षायिक सम्यग्दर्शन की महिमा ही है कि क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव पंचम भव में कभी नहीं आता और वह चौथे भव में अवश्य ही शिव को प्राप्त करता है।

पुण्यात्मा जीव ही क्षायिक सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर सकता है। इसकी महिमा यह है कि निकट भव्य जीव इसे प्राप्त कर तीर्थंकर पद तक प्राप्त कर सकता है। क्षायिक सम्यग्दर्शन चौथे से सातवें गुणस्थान तक प्राप्त कर सकते हैं।

सम्यग्दर्शन की दुर्लभता को समझते हुए हमें प्रतिपल धर्मध्यान और कर्मक्षय के उपाय का प्रयत्न करना चाहिए। जब सम्यग्दर्शन कितना दुर्लभ है तो क्षायिक-सम्यग्दर्शन कितना दुर्लभ होगा। क्षायिक सम्यग्दर्शन की यह विशेषता है कि सम्यक्त्व के काल में यदि मनुष्य और तिर्यञ्च की आयु का बंध होता है तो नियम से देवायु का ही बंध होता है और नारकी तथा देव को नियम से मनुष्यायु का ही बंध होता है।

इसी मंगल भाव से आचार्य श्री के चरणों में नमोस्तु.......

आगम प्रमाण-

1.तीर्थोदय काव्य, आचार्यश्री आर्जवसागर जी, पृष्ठ-3, पद्य-1

2. वही; पृष्ठ-9, पद्य-19

3. वही; पृष्ठ-39, पद्य-160

4. वही; पृष्ठ-39, पद्य-164

5. वही; पृष्ठ-39, पद्य-165

6. वही; पृष्ठ-39, पद्य-165

पिच्छिका की भावना

भाग्य से मिलता पिच्छि-परिवर्तन।
संयम-मय हो निज का तन-मन॥

लेते-देते पिच्छि को जब।
पुण्य मिले व भाग्य खुले तब॥

लगता जिन को पिच्छि मिली है।
वा जिन गुरु को पिच्छि दी है॥

उन गुरुवर से संयम पायें।
पिच्छि-कमण्डल दीक्षा पायें॥

उनके पथ को भूल न जायें।
उनके गुण-गण मिलकर गायें॥

-गुरु आशीष

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का जीवन परिचय

पूर्व नाम : पारसचंद जैन
पिता एवं माता : श्री शिखरचंद जैन, श्रीमती मायाबाई जैन
जन्म : 11 सितम्बर 1967, फुटेरा कलां, जिला दमोह (मध्यप्रदेश)
शिक्षा : बी.ए., डिग्री कॉलेज, दमोह (मध्यप्रदेश)
ब्रह्मचर्य व्रत : 19 दिसम्बर 1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
क्षुल्लक दीक्षा : 8 नवंबर 1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)
ऐलक दीक्षा : 10 जुलाई 1987, अतिशय क्षेत्र थूबोन जी, अशोकनगर (मध्यप्रदेश)
मुनि दीक्षा : 31 मार्च 1988, महावीर जयंती, सिद्धक्षेत्र सोनागिरि जी, दतिया (मध्यप्रदेश)
दीक्षा गुरु : संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
आचार्य पद : 25 जनवरी 2015, इंदौर (समाधि पूर्व आचार्य श्री सीमंधरसागर जी महाराज द्वारा)

कृतियाँ एवं रचनाएँ

आचार्यश्री की साहित्य साधना अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायी है। उन्होंने दो दर्जन से अधिक कृतियों का सृजन किया है, जिनके माध्यम से आचार्य श्री ने जैन दर्शन के गूढ़ तत्त्वों को सरल और व्यवहारिक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

1. आगम ग्रंथ- आगम अनुयोग भाग (1-2), जैनागम संस्कार (हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, तमिल, कन्नड़), आध्यात्मिक प्रवचन, पर्युषण पीयूष।

2. काव्य व शतक- तीर्थोदय काव्य, सदाचार सूक्ति काव्य, मोक्षप्रदायक काव्य (आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना काव्य, तीर्थंकर स्तुति शतक, सम्यक् ध्यान शतक, श्री अंतादि शतक, गुरु-गुण महिमा काव्य, आशीर्वाद शतक, धर्म भावना शतक, अध्यात्म समयोदय काव्य), ज्ञान वर्धन काव्य आदि।

3. पद्यानुवाद- पद्यानुवाद मंजरी (गोम्मटेश थुदी, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, वारसाणुवेक्खा, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)।

4. अन्य विशेष- आर्जव कविताएँ, लोक कल्याण विधान, ॐ योग ध्यान आदि।

विशेष उपलब्धियाँ-

आचार्य श्री को Chania International University द्वारा भारतीय दर्शन, जैन आगम के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक जागरण के क्षेत्र में किए गये अद्वितीय योगदान हेतु Docotrate of Philosophy की मानद उपाधि प्रदान की गई एवं America international University द्वारा Doctorate of Literature (D.Litt.) की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. आचार्य श्री आर्जवसागर जी को अनेक आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं मानवीय योगदान के लिए यूएसए, लंदन, एशियन, यूएन, इंडिया, गिनीज, इंटरनेशनल, वर्ल्ड वाइड, लिमका बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के संस्थानों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत किया गया है। इसके

माध्यम से पूरे विश्व में आचार्य भगवन् की कृतियों की कीर्ति सर्वव्यापी फैली है। अनेक संस्थाओं द्वारा आपको ''चारित्र शिरोमणि'', ''ब्रह्माण्ड के देवता'', ''जैन धर्म के गौरवान्वित संत'', ''अहिंसक प्रचारक'', ''आध्यात्मिक संत'', ''आहारौषध विज्ञान के ज्ञाता'', ''साहित्यिक प्रतिभा संपन्न'', ''20 वीं सदी के हिंदी साहित्य के, सर्वोच्च शिखर'', ''विश्व के भगवान'', करुणा के सागर, अहिंसा के पुजारी, तमिल देश के उद्धारक संत, महावीर प्रतिमूर्ति, विद्या गुरु से दीक्षित बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य, बहुभाषाविद् ''वर्ल्ड गॉड'' जैसी उपाधियाँ देकर जैसी उपाधियां देकर स्वर्ण भारत सम्मान, राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार, भारतीय रत्न अवार्ड, पद्म श्री गौरव सम्मान, भारत गौरव रत्न, भारत प्रतिभा सम्मान, नेशनल अवार्ड, प्रेरणा सम्मान, भारतीय उत्कृष्टता सम्मान, नव भारत सेवा रत्न सम्मान, ग्लोबल अचीवर्स अवार्ड, अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार, समाज सेवा आदर्श रत्न पुरस्कार, विजीनरी लीडर अवार्ड, विजय रत्न सम्मान, विद्या रत्न सम्मान, पीएम मोदी विजन ऑफ भारत अवार्ड, श्रेष्ठ रत्न सम्मान, भारत स्वाभिमान, विजय गौरव सम्मान, स्टार ऑफ द ग्लोब अवॉर्ड, अखंड भारत सम्मान, राष्ट्रीय गौरव सम्मान, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय पुरुस्कार, एपीजे अब्दुल कलाम नेशनल अवार्ड, स्वामी विवेकानंद प्रेरणा सम्मान, डॉ. भीमराव अंबेडकर नेशनल अवार्ड, उज्जवल भारत पुरस्कार, इंडिया प्राइड इन एजुकेशन पुरस्कार, सद्भावना सेवा सम्मान, World Talent Award, Global Prestigious Award, International Star award, Rising Bharat Star Award certificate of life time achivement, Droupadi Murmu presidential Honor for social justice, Honorary Doctorate degree by America international University, Kindness Ambassador of India Award, India Influencer Award, सहित अनेक अवार्ड एवं उपाधियों से भी सम्मानित किया है ।

प्रवचन और प्रेरणाएँ-

डॉ. आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज अपने ओजस्वी, तार्किक और हृदयस्पर्शी और आध्यात्मिक प्रवचनों के लिए प्रसिद्ध हैं। आपके प्रवचन चौदह प्रदेशों संबंधी अनेकों जेल, स्कूल, विश्वविद्यालय, आश्रम आदि अनेक संस्थानों में भी हुए हैं। आचार्य श्री का उपदेश समाज में नशामुक्ति, शाकाहार, नैतिकता, अहिंसा और शिक्षा के प्रसार का माध्यम बन चुका है। आचार्य श्री विशेष रूप से जनमानस को सम्यग्दृष्टि बनाकर संयम, सदाचार और आत्मानुशासन की ओर प्रेरित करते हैं।

आध्यात्मिक योगी, बहुभाषाविद्, 20 शिष्यों के दीक्षादाता आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का जीवन तप, त्याग, साधना और सेवा का आदर्श उदाहरण है। समाज में उनकी साधना के माध्यम से आध्यात्मिकता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों पर निरंतर प्रकाश फैल रहा है। गुरुदेव ने देश की संस्कृति की संपदा को उद्घाटित करते हुए कीर्तिमान स्थापित कर भारत देश को गौरवान्वित किया है।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के करकमलों से दीक्षित शिष्य-शिष्याएँ(चेतन कृतियाँ) की सूची- मुनिश्री सुभद्रसागर जी, मुनिश्री महानसागर जी, मुनिश्री नमितसागर जी, मुनिश्री भाग्यसागर जी, मुनिश्री महत्सागर जी, मुनिश्री भास्वतसागर जी, मुनिश्री विलोकसागर जी, मुनिश्री विशोधसागर जी, मुनिश्री विबोधसागर जी, मुनिश्री विदितसागर जी, मुनिश्री विभोरसागर जी, मुनिश्री सजगसागर जी, मुनिश्री सानंदसागर जी, आर्यिका प्रतिभामति जी, आर्यिका राजितमति जी, आर्यिका सुयोगमति जी, आर्यिका मार्मिकमति जी, ऐलक अर्पणसागर जी, ऐलक हर्षितसागर जी।

समाचार

-सहसंपादकीय
बहिन ऋषिका जैन, दमोह

आचार्य आर्जवसागर के व्यक्तित्व कृतित्व पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

मध्यप्रदेश के जल संसाधन मंत्री सहित अनेक विद्वानों की रही उपस्थिति

देवी अहिल्याबाई की नगरी इंदौर के उदयनगर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी के पावन अवसर पर लगभग 50 से 60 विद्वान उपस्थित हुए। जिनमें अखिल भारतीय परिषद् एवं राष्ट्रीय विद्वत् परिषद के विद्वान सहित अनेक विद्वान, डॉक्टर, प्रोफेसर, शोधार्थी उपस्थित हुए। इस संगोष्ठी को एकलव्य यूनिवर्सिटी दमोह के तत्वावधान में आयोजित किया गया। संगोष्ठी में उपस्थित सभी अद्वितीय विभूतियों ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किये। जिनके वक्तव्य का आधार आचार्य आर्जवसागर जी महाराज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व रहा। जिनके माध्यम से आचार्य श्री को एवं उनकी लगभग 25 से 30 कृतियों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

माननीय जल संसाधन मंत्री तुलसीराम जी सिलावट एवं विश्व हिंदू परिषद के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद जी सांवला ने भी गुरुदेव का मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर विद्वत् संगोष्ठी की और अधिक शोभा बढ़ाई। माननीय मंत्री जी ने कहा कि इंदौर के लिए आचार्य भगवन् आर्जवसागर का चातुर्मास गौरव की बात है उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश की सरकार की ओर से एवं देवी अहिल्याबाई की नगरी की ओर से मैं आभार प्रदर्शन करता हूं।

इस अवसर पर संगोष्ठी के प्रारंभ में मंगलाचरण किया गया एवं संयोजक मुकेश जैन 'विमल' एवं कार्यक्रम संचालक बहिन इंजी.ऋषिका दीदी , दमोह के द्वारा कार्यक्रम को गतिविधि प्रदान की गई। संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर मंत्री जी एवं आर्जव प्रभावना संघ भारत के द्वारा भाव विज्ञान पत्रिका एवं विश्व धर्म की रूपरेखा कृति का विमोचन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम उद्घाटन सत्र में आदरणीय विद्वान श्रेयांश कुमार जी बड़ौत, डॉक्टर अल्पना मोदी द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया एवं डॉक्टर जयकुमार जी मुजफ्फरनगर द्वारा प्रथम सत्र की अध्यक्षता की गई । तत्पश्चात् दोपहर में द्वितीय सत्र का प्रारंभ हुआ जिसमें डॉ.सुनील जैन संचय ललितपुर, डॉ. ब्र. धर्मेंद्र जैन जयपुर, डॉ.ज्योति बाबू जैन उदयपुर, डॉ. ब्र.अनिल जी जयपुर, ब्र. जिनेश मलैया द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुतीकरण किया गया एवं द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ शीतलचंद जी जयपुर द्वारा की गई। इसी दौरान डोंगरगांव से पधारे पवन जैन प्रेमी ने सुंदर कविता के माध्यम से सभी विद्वानों का मन मोहित किया एवं योगाचार्य राजीव जैन 'त्रिलोक' के द्वारा एक मुख्य घोषणा की गई कि आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज की कृति ''सम्यक ध्यान शतक'' को **तुलसी साहित्य अकादमी** के द्वारा तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया। विश्व कीर्तिमान पर हर्ष का संदेश भी विद्वानों तक पहुंचा कि आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज की रचनाएं **विश्व रिकॉर्ड** (USA, UK, UN) में दर्ज की गई है। यह केवल जैन समाज ही नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदी साहित्य जगत के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। जैन आचार्यों का हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान रहा है। उनकी वाणी और लेखनी ने समाज को धर्म, संस्कृति और नैतिकता की अनुपम दिशा प्रदान की है। इस उपलब्धि

से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि संकल्प पवित्र हो और प्रयास निरंतर, तो सफलता स्वयं इतिहास रचती है।

अगले दिन तृतीय सत्र का प्रारंभ किया गया जिसमें श्रेयांश कुमार जी बड़ौत द्वारा अध्यक्षता की गई एवं डॉ. आशीष जी बम्होरी, डॉ. सुलेखा जी गोटेगांव, डॉ.जयकुमार जी मुजफ्फरनगर, डॉ. सुरेंद्र भारती बुरहानपुर, डॉ.सत्येंद्र जैन दमोह, डॉ. हनुमान सिंह गुर्जर द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी के अंतिम चतुर्थ सत्र में डॉ. पं.जयकुमार जी निशांत द्वारा अध्यक्षता की गई एवं डॉ. समता जैन, डॉ. सुशीला सालगिया इंदौर, प्रीति जैन ललितपुर, डॉ अनुपमा जैन इंदौर, डॉ सरिता दोशी, डॉ. अभिषेक दमोह, डॉ. पंकज जैन इंदौर, डॉ. भरत जैन इंदौर, ब्र.समता मारोरा, डॉ.बाहुबली जैन, योगाचार्य नवीन जैन, डॉ .आशीष जैन दमोह, डॉ.पं.अशोक शास्त्री, डॉ. रजनी जैन, डॉ. अरविंद जैन रीडर पिड़ावा, इंजीनियर ब्र.बहिन ऋषिका जैन दमोह द्वारा आलेख प्रस्तुत किये गये। उपरांत आचार्य भगवन् आर्जवसागर जी महाराज का समीक्षात्मक उद्बोधन भी हुआ।

अंत में सकल दिगंबर जैन समाज उदयनगर पारमार्थिक ट्रस्ट एवं कमेटी द्वारा संगोष्ठी में उपस्थित सभी विद्वानों आदि का सम्मान कार्यक्रम एवं आभार प्रदर्शन भी सानंद संपन्न हुआ।

इंदौर में पाठशाला सम्मेलन कार्यक्रम सानंद संपन्न

उदयनगर, इंदौर में विराजमान आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित पाठशाला सम्मेलन कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक आयोजित किया गया। जिसमें इंदौर के अलावा अन्य महानगरों से भी पाठशालाओं ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर सभी पाठशालाओं ने अपनी अपनी शिक्षाप्रद प्रस्तुतियां देकर लोगों का मन मोह लिया। संस्कार की बातों और उनके अनुभव ने सभी को भाव विभोर कर दिया। इसी बीच आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज ने अपने मंगल प्रवचन के दौरान कहा कि आज हमें स्वाध्याय के साथ साथ संस्कृति रक्षा की भी आवश्यकता है। यह पाठशाला सम्मेलन कार्यक्रम संस्कारों का आदान प्रदान कराने वाला कार्यक्रम है और अंत में कहा कि संस्कार बचपन में दिया जाता है न कि पचपन में।

आचार्य श्री ने कहा कि वर्तमान में उत्पादनकर्ता वस्तुओं के स्वाद को बढ़ाने के लिये खाद्यान्नों में ऐसे पदार्थो को मिलाने लगे हैं जो असेवनीय हैं, इसलिये बाजार के खाद्यान्न का त्याग करना चाहिये। उन्होंने वर्तमान जीवन शैली की चर्चा करते हुये कहा कि आजकल महानगरों और नगरों की जिंदगी ऐसी हो गयी है कि पति-पत्नी दोनों सर्विस में हैं, बाजार से ही सारी सामग्री आती है नौकर खाना बनाकर जैसा खिला रहे हैं, वैसा भोजन आप लोग कर रहे है, बच्चे बाहर बोर्डिंग स्कूल या होस्टल में पढ़ रहे हैं, बोर्डिंग से निकले और उच्च अध्यन के लिये सीधे विदेश में निकल गये तो उनके अंदर संस्कार कहाँ से आएंगे? फास्टफूड को खाकर अपनी जिंदगी चला रहे हैं? इधर मां बाप अकेले हैं और उधर बच्चे अकेले हैं और कई बच्चे तो उधर ही अपना जीवनसाथी चुन घर बसा लेते हैं, मां बाप के अंतिम समय पड़ोसी या मोहल्ले वाले ही आपका अंतिम संस्कार कर देते हैं। उपस्थित जन समुदाय से बड़े ही भावुक अंदाज में पूंछा कि आखिर आप लोग अपने बच्चों को क्यों इतनी शिक्षा देते हो? और क्यों धन संग्रह करते हो? आखिर किसलिये? उन्होंने संयुक्त परिवार की बात करते हुये कहा कि बच्चों को बाबा-दादी, नाना-नानी कहानी सुनाकर बड़ा करते थे जिससे उनको संस्कार मिलते थे। पहले विवाह

होटल या गार्डन में नहीं होते थे बल्कि अपने घर के सामने ही पांडाल लग जाता था और घर के लोग आत्मीयता के साथ आपको मना मनाकर के भोजन कराते थे उस भोजन का महत्व था। आजकल तो बफे सिस्टम है क्या खा रहे हैं आप? कौन किस भावना के साथ आपको भोजन बना रहा है ? कैसी भोजन सामग्री है? कोई विवेक ही नहीं बचा है। एक मात्र अपनी कषायों का ही पोषण है, वहाँ पर आत्मीयता का कोई वातावरण नहीं है। अंत में श्री दिगंबर जैन धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट एवं सकल दिगंबर जैन समाज उदयनगर इंदौर द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त पाठशालाओं को ट्राफी, मोमेंटो आदि से सम्मानित किया गया एवं सभी पाठशालाओं के बच्चों को सांत्वना पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया एवं आचार्य भगवन् के करकमलों से उन्हें साहित्य भी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव, वर्षायोग निष्ठापन एवं भव्यातिभव्य अविस्मरणीय ऐतिहासिक पिच्छिका परिवर्तन समारोह कार्यक्रम

श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट एवं सकल दिगंबर जैन समाज उदय नगर इंदौर के तत्वावधान में आचार्य भगवन् श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज से दीक्षित आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज का पिच्छिका परिवर्तन समारोह कार्यक्रम दिनांक 26 अक्टूबर 2025 दिन रविवार को आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम संपन्न हुए।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी के पिच्छिका परिवर्तन समारोह में इंदौर पधारे राज्यपाल

इंदौर के श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर उदयनगर में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित 2025 के वर्षायोग के पिच्छिका परिवर्तन समारोह के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कर्नाटक के राज्यपाल, अहिंसा के पुजारी माननीय थावरचंद जी गहलोत की उपस्थिति रही।

राज्यपाल महोदय ने आचार्य आर्जवसागर जी महाराज ससंघ का आशीर्वाद ग्रहण कर साहित्य भी प्राप्त किया एवं आचार्य श्री को नवीन पिच्छिका भी भेंट करने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। पिच्छी परिवर्तन के कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण पूर्वक किया गया। कार्यक्रम का संचालन इंजीनियर ब्र.बहिन ऋषिका जैन, दमोह द्वारा किया गया। इस अवसर पर राजस्थान, दिल्ली, तमिलनाडु, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, यूपी आदि विभिन्न प्रदेशों से हजारों की संख्या में लोग उपस्थित हुए। आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन करने का महान सौभाग्य कर्नाटक के गवर्नर माननीय थावरचंद गहलोत जी, पवन जैन प्रेमी डोंगरगांव, पंकज जैन नागदा, नगर पार्षद आदि को प्राप्त हुआ। माननीय थावरचंद जी गहलोत सहित नगर के सांसद शंकर लालवानी, विधायक महेंद्र हार्डिया एवं पार्षद राजीव जैन अनेक विशिष्ट अतिथियों के द्वारा आचार्य श्री रचित ''आध्यात्मिक प्रवचन'' एवं ''सदाचार सूक्ति काव्य'' कृतियों का विमोचन भी किया गया। गवर्नर थावरचंद गहलोत सहित विधायक, सांसद आदि के द्वारा आर्जव प्रभावना संघ भारत के अंतर्गत तीन अवार्ड अहिंसा वीर चक्र, ज्ञान वीर चक्र, प्रभावना वीर चक्र क्रमशः पवन जैन प्रेमी डोंगरगांव, हनुमान सिंह गुर्जर जैन, जयपुर और इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह (B.E., M.A., Ph.D.) को प्रदान किए गए।

श्री दिगंबर जैन धार्मिक एवं परमार्थिक ट्रस्ट एवं सकल दिगंबर जैन समाज उदय नगर द्वारा मुख्य अतिथि माननीय थावरचंद जी गहलोत सहित इंदौर नगर के सांसद शंकर लालवानी, विधायक महेंद्र हार्डिया एवं पार्षद राजीव जैन तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों सहित कमल अजमेरा भोपाल, पंकज जैन नागदा, शरद जैन नागदा जंक्शन, पवन जैन प्रेमी डोंगरगांव आदि का स्वागत सम्मान किया गया।

इसी दौरान प्रति वर्षानुसार कण्ठपाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण भी किए गए। आचार्य भगवन् आर्जवसागर जी महाराज ने अपने प्रवचन के दौरान बताया कि यह पिच्छिका परिवर्तन समारोह वर्ष में एक बार किया जाता है जो संयम का त्यौहार रूप मनाया जाता है। यह पिच्छिका संयम का उपकरण है जिसके माध्यम से सूक्ष्म जीवों की रक्षा होती है। इसी तरह अहिंसा, संस्कार और जैन धर्म की प्राचीनता पर प्रकाश डाला।

आचार्य श्री ने की निर्यापक की घोषणा

इसी पिच्छिका परिवर्तन के दौरान **आचार्य गुरुवर श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने अपने परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 विलोकसागर जी महाराज को इंदौर नगरी में निर्यापक श्रमण के पद से सुशोभित किया।**

आचार्य भगवन् ने बताया कि उनकी बहुत अच्छी प्रभावना है, बड़े ही प्रभावक हैं एवं किसी भी कार्यक्रम को करने के पूर्व आशीर्वाद अवश्य लेते हैं। मेरा आशीर्वाद सभी शिष्यों को निरंतर प्राप्त होता रहता है। सन् 2019 में भोपाल में दीक्षित मुनिश्री विलोकसागर जी का पूर्व नाम बाल ब्रह्मचारी चक्रेश शास्त्री है जिनका 2025 का चातुर्मास कराने का सौभाग्य मुरैना नगर वासियों को प्राप्त हुआ।

राज्यपाल (Governor of Karnatak) का वक्तव्य

इसी अवसर पर गुरुवर के प्रवचन के पूर्व माननीय मुख्य अतिथि गहलोत जी ने अपने वक्तव्य के दौरान आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के चरणों में वंदन अर्पित कर नमोस्तु करते हुए कहा कि जैन धर्म बहुत महान है और बहुत प्राचीन है। इसमें जीवों की रक्षा मुख्य रूप से की जाती है। उन्होंने बताया कि वे पूर्णता अहिंसक हैं। उन्होंने जैन धर्म पर बहुत ही सुंदर प्रकाश डाला और कहा कि मैं अपना सौभाग्य मानता हूं कि मुझे आज ऐसे गुरु आचार्य श्री आर्जवसागर जी; जो साहित्यिक प्रतिभा संपन्न हैं एवं जिन्हें आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं मानवीय योगदान के लिए Doctor of Philosophy and D. Litt. की मानद उपाधि प्राप्त हैं। ऐसे महान गुरु के आदर्शों का हम भी पालन करते हुए जैन धर्म का मान-सम्मान बढ़ाते रहें और अपने देश का नाम रोशन करते रहें। इस तरह राज्यपाल जी ने गुरु की गरिमा को जन-जन तक पहुंचा कर अपनी अहिंसा जीवन शैली का परचम फैलाया। पश्चात् दिगम्बर जैन समाज उदयनगर कमेटी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में बाहर से पधारे सभी अतिथियों का सम्मान एवं सत्कार भी किया गया। इस तरह आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के वर्षायोग के दौरान इंदौर में अभूतपूर्व अविस्मरणीय ऐतिहासिक धर्म प्रभावना हुई।

आचार्य ससंघ के पूर्वावस्था के परिवार जन गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

पाठशाला सम्मेलन, इंदौर में कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हुए नन्हे मुन्ने बाल कलाकार।

कलश स्थापना कार्यक्रम 2025 इंदौर की पावन झलकियाँ, कार्यक्रम में उमड़ा जन सैलाब।

RNI Reg No MPHIN/2007/27127
ISSN: 3048-9954 (Print)

प्रति

पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम इंदौर 2025 का संचालन करते हुए ब्र. ऋषिका दीदी, दमोह।

महानगर इंदौर में प्रभावना वीर चक्र (अवार्ड) से सम्मानित होते हुए इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह (गवर्नर, सांसद, विधायक द्वारा)

आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज का आशीर्वाद ग्रहण करते हुए चन्द्रेश जैन शास्त्री दमोह अधीक्षक डाकघर मंदसौर।

कलश निष्ठापन के दौरान सम्मानित होते हुए संजय मित्तल रामगंजमण्डी सपरिवार।

इंदौर में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पिच्छिका परिवर्तन समारोह कार्यक्रम में उपस्थित हुए गवर्नर थावरचंद गहलोत अपना वक्तव्य देते हुए।

गुरु करकमलों से पिच्छिका प्राप्त करते हुये मुनिश्री भाग्यसागर जी महाराज।

पिच्छिका परिवर्तन दौरान गुरुदेव से नवीन पिच्छिका प्राप्त करते हुए मुनिश्री महत्सागर जी महाराज।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161